सांस्कृतिक इतिहास

Cultural History
3

लिवान
Liwan

लिवान मस्जिद का स्तंभों वाला कमरा होता है।

The pillared cloister of a mosque is known as Liwan.

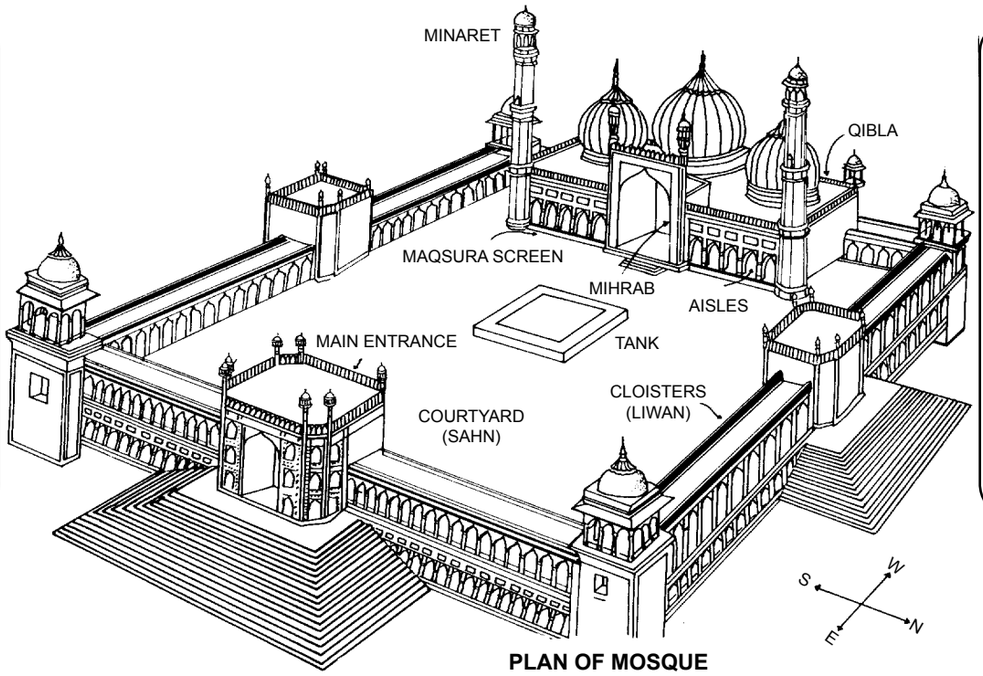

PLAN OF MOSQUE

मक़सुरा
Maqsura

मस्जिद के किबला के आखिरी सिरे को मक़सुरा कहते हैं। रेलिंग के मार्फत यह हिस्सा अलग रहता है तथा इसका उपयोग केवल शाही व्यक्ति या मौलवी ही कर सकता है।

Maqsura is a railed off area at the qibla (wall) end of a mosque. It is reserved for the chiefs of the community or rulers.

मेहराब
Mihrab

मेहराब, किबला दीवार में बने आले को कहते हैं। अमूमन यह आदमकद होता है और यह प्रार्थनालय की किबला दीवार के अन्दर स्थापित होती है तथा मक्का की सही दिशा दिखाता है।

Mihrab is a niche or alcove, usually the height of a man. It is set into the qibla wall of a prayer hall and indicates the precise direction of Mecca.

सहन
Sahn

मस्जिद के प्रार्थना स्थान के सामने की खुली जगह (आँगन) को सहन कहते हैं। यहीं पर सभी लोग नमाज पढ़ने के लिए इकट्ठे होते हैं।

Sahn is the courtyard of a mosque where the faithful assemble for prayers.

किबला
Qibla

मस्जिद या प्रार्थना-स्थल की काबा (मक्का) की तरफ की दीवार को किबला कहते हैं। इसी कारण क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति की वजह से किबला की दिशा हमेशा एक-दूसरे से अलग रहती है।

Qibla is the wall of the mosque or prayer hall oriented towards the Kaaba of Mecca. It is therefore, varying in direction according to the geographical region.

इस शैक्षणिक संग्रह में भारत की वास्तुकला, मूर्तिकला, तथा चित्रकला के 24 सचित्र उदाहरणों को सम्मिलित किया गया है। यह कलात्मक कार्य भारतीय इतिहास के मध्ययुगीन काल से संबंधित हैं, जिसे स्कूल की पाठ्य-सूची में जोड़ा गया है और ये 7वीं से 16वीं सदी के बीच के काल की कलात्मक उपलब्धियों के अवशेष हैं। मध्ययुगीन काल के इस शैक्षणिक संग्रह को दो भागों में बांटा गया है और इनमें भारत के विभिन्न भागों से लिए गए अनेक स्मारकों तथा ऐतिहासिक भवनों को सम्मिलित किया गया है। इस संग्रह में दिए गए उस काल के स्मारक-चिन्हों में से कुछ का वर्णन सांस्कृतिक इतिहास भाग-II में भी किया जा चुका है। अर्थात् इस संग्रह में सांस्कृतिक इतिहास भाग-II में वर्णित कुछ स्मारकों को भी शामिल किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि आप जहां तक संभव हो सके, शैक्षणिक संग्रह भाग-I, II और III का एक साथ उपयोग कर सकें।

इस काल में बहुत ही श्रेष्ठ इमारतों का निर्माण किया गया था इसलिए उनमें से सिर्फ कुछेक का चयन करना बहुत कठिन कार्य है। हम आशा करते हैं कि आप और छात्र मिलकर प्रसिद्ध इमारतों का अपना संग्रह तैयार कर सकेंगे। इस शैक्षणिक संग्रह में दी गई सामग्री को आपके प्रदेश के कलात्मक प्रयोजनों (विषय-वस्तुओं) के साथ जोड़ा गया है।

अनेक कालों में लोगों की कलात्मक अभिव्यक्ति ऐतिहासिक जानकारी का एक मूल्यवान स्रोत है और वे उस समय की सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के बारे में पूरी जानकारी उपलब्ध कराती है। यहां मध्ययुगीन काल के लोगों तथा 20वीं सदी के लोगों की जीवन-शैली में अनेक समान तत्व पाए जाते हैं। आज हम भारत में जो भाषाऐं बोलते हैं, हमारा वर्तमान खान-पान तथा वेश-भूषा मध्ययुगीन काल में भी बहुत प्रचलित थी। 7वीं सदी से 16वीं सदी के शिलालेखों तथा पांडुलिपियों (हस्तलिपियों) में हमें उस काल के बारे में कुछ ऐतिहासिक जानकारी मिलती है।

इस शैक्षणिक संग्रह का उद्देश्य भारत के इतिहास तथा संस्कृति के विकास के बारे में छात्रों को अध्ययन तथा जानकारी के लिए प्रोत्साहित करना है। हम आशा करते हैं कि यह शैक्षणिक संग्रह छात्रों को भारतीय कला में सौंदर्य के प्रति सुग्राही बनाएगा और उनमें भारत की समृद्ध, विविध सांस्कृतिक विरासत के लिए रुचि तथा प्रेम उत्पन्न करेगा।

This Cultural History Package consists of 24 illustrated examples of Indian architecture, sculpture and painting. These works of art belong to the medieval period of Indian History as it is mentioned in the school syllabus and traces the artistic achievements between the 7th to 16th centuries C.E. This Cultural History Package on the medieval period has been divided into two parts to cover a number of monuments and historical buildings from different regions of India. The monuments represented in this package overlap with some of those in Cultural History Part 2. For this reason, you must use Cultural history Package Part 1, 2 and 3 together, wherever possible.

Many great buildings were constructed during this period and it has been very difficult to select only a few. It is hoped that you and the students will make your own collection of famous buildings and artistic objects of your region to supplement the material that is being given in this package.

The artistic expression of people through the ages is a valuable source of historical information and provides insights into the existing social and economic conditions. There are many common factors in the life style of people of the 20th century and those of the medieval period. The languages that we now speak in India, the food we eat and the clothes we wear were becoming popular during that period. From the inscriptions and manuscripts of the 7th to 16th centuries C.E., much historical information is available to us.

The objective of this package on Cultural History is to encourage students to study and learn about the development of India's culture and history, sensitize them to the beauty in Indian art and create in them a love and concern for their cultural heritage.

उत्तरी तथा पश्चिमी भारत में अनेक छोटे साम्राज्य फूले-फले और हमें एक समृद्ध वास्तुशिल्पीय विरासत प्राप्त हुई। यहां हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात और राजस्थान में 10वीं तथा 11वीं सदी के मंदिर पाए जाते हैं। यहां राजस्थान स्थित रनकपुर तथा माऊण्ट आबू में बहुत से जैन मंदिर हैं। 15वीं सदी के रनकपुर स्थित इन मंदिरों की स्थापना 1449 में जैन व्यापारियों द्वारा, मेवाड़ के शासक तथा वीर योद्धा रणकुम्भा की सहायता से की गई थी। माऊण्ट आबू स्थित जैन मंदिरों के बीच, विमल वसाही का मंदिर सबसे प्राचीन है। इसका निर्माण 11वीं सदी में किया गया था। ये मंदिर नक्काशीदार छतों, स्तम्भों तथा उत्कृष्ट संगमरमर की पट्टियों से प्रचुर मात्रा में सजे हुए हैं, जबकि भवन की बाहरी दीवारें अलंकृत नहीं हैं। पश्चिमी भारत में जैन समुदाय ने अनेक पीढ़ियों के लिए दृष्टांत हस्तलिपियों की कला को संरक्षित तथा प्रोत्साहित किया।

In western and northern India, a number of small kingdoms prospered and have left us a rich architectural heritage. There are temples of the 10th and 11th centuries to be found in Himachal Pradesh, Uttar Pradesh, Gujarat and Rajasthan. There are several Jain temples in Rajasthan at Ranakpur and Mount Abu. The 15th century Jain temples at Ranakpur were built in 1449 C.E. by Jain merchants with the help of Ranakumbha, the famous warrior and ruler of Mewar. Among the Jain temples at Mount Abu, the earliest is the Vimala Vasahi temple built in the 11th century. These temples are lavishly decorated with fine marble panels, pillars and carved ceilings, though the exterior wall of the buildings are relatively simple. In western India, the Jain community also preserved and patronised the art of illustrating manuscripts for several generations.

इस्लाम के धर्म ग्रंथ कुरान को भी खूबसूरत तरीके से लिखा व सजाया गया है। हस्तलिखित कुरान का महत्वपूर्ण स्थान है तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसकी प्रतिलिपि तैयार की गई और इसे संजोकर रखा गया। इस्लाम धर्म एवं उसके अनुयायी भारत में आए तो उनके समुदाय की आवश्यकताओं तथा कार्यों-प्रकार्यों की पूर्ति के लिए एक नवीन वास्तुशिल्पीय शैली का आविर्भाव हुआ। किबला (दीवार) तथा मेहराब (आला) मिलाकर बनी मस्जिद (प्रार्थना स्थल) की पिछली दीवार हमेशा मक्का की ओर ही होती है। भारत में किबला पश्चिमी क्षितिज की सीध में होते हैं। जिस प्रकार वाराणसी और तिरूपति हिन्दुओं के लिए तथा इज़रायल में येरूशलम ईसाईयों के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ-स्थल हैं, उसी प्रकार सऊदी अरब में स्थित मक्का, मुस्लिम समुदाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ-स्थल हैं। यहां रोज़ की प्रार्थना (नमाज) के लिए तीन प्रकार की मस्जिदें हैं। सप्ताह की प्रार्थना सभाओं के लिए जामा मस्जिद या शुक्रवार (जुमे की) मस्जिद हैं। यहां भारी संख्या में लोग एक-दूसरे के साथ मिलकर एक सभा में एकत्रित होते हैं। यह मस्जिद एक विशाल आंगन से जुड़े हुए एक बरामदे या दीवार से लगभग पूरी तरह घिरी हुई होती है। किबला सहित ईदगाह एक तीसरे प्रकार की मस्जिद है; जिसके अग्र भाग में ईद के दौरान जन समूह की प्रार्थना सभा के लिए एक खुला स्थान होता है। मस्जिद की प्राय: 1, 2 या 4 मीनारें होती हैं ताकि मौलवी ऊपर चढ़ सकें और लोगों को प्रार्थना करने के लिए बुला सकें। मस्जिद के भीतर ही एक फव्वारा या पानी का तालाब भी होता है ताकि नमाज से पहले लोग वजू कर सकें।

The Quran, the holy book of Islam was also beautifully written and decorated. The hand written Quran was valuable possession and was copied generation after generation and treasured. When Islam came to India, a new architectural style emerged to serve the functions and needs of the community. The masjid, the place of prayer consists of the qibla (wall) and the mihrab (niche) which faces the direction of Mecca. Mosques or masjids throughout the world face Mecca, in Saudi Arabia is the most important pilgrimage centre for the Muslims, like Varanasi or Tirupathi for the Hindus and Jerusalem for the Christians. There are three types of mosques, the masjid for daily prayer, the Juma masjid or Friday mosque for weekly prayers where a large number of people can gather together in a congregation. This masjid is often surrounded by a wall or verandahs enclosing a large open courtyard. The id-gah is the third type of mosque with only the qibla, the wall facing Mecca with an open space in front for mass prayers during Id. The masjid has often 1, 2 or 4 minars, so that the Maulvi can climb up and call people to prayer. There is also a fountain or water tank within the masjid for ablutions.

मृतक को दफ़नाने के लिए मकबरों की इमारत का निर्माण, एक अन्य महत्वपूर्ण नवनिर्माण कार्य था। संतों और सुल्तानों के लिए दरगाहें बनाई जाती थीं तथा सम्राटों ने अपने जीवन के कीर्तिगान के लिए विशाल मकबरे बनवाए।

The other important new construction of the period was the building of tombs to bury the dead. Dargahs were built for saints and sultans and emperors built large tombs (makbara) to commemorate their lives.

इस्लाम के साथ ही भारत में भवनों के निर्माण के लिए नई प्रौद्योगिकी तथा वैज्ञानिक सिद्धांत भी आए। इनमें (गुम्बज) और मेहराब (तोरण) विशिष्ट हैं जिसने भारत में वास्तुशिल्प की शैली को पूर्ण रूप से नया आयाम प्रदान किया। मेहराब दो दीवारों या स्तम्भों के बीच के खाली स्थान को जोड़ने की एक नई विधि है। मेहराब के परिचय से पहले दो स्तम्भों के खाली स्थान को जोड़ने के लिए एक ही पत्थर से बनी कड़ी का प्रयोग किया जाता था। यह कड़ी बहुत लम्बी नहीं हो सकती थी क्योंकि यह टूट सकती थी, इसलिए हिन्दू वास्तुकला में दरवाजे तथा खिड़कियां संकुचित होते थे और मण्डप बहुत सारे स्तम्भों के सहारे टिके होते थे अर्थात् मण्डपों में स्तम्भों की भरमार होती थी। जबकि मेहराब में पत्थर के छोटे-छोटे खण्डों को घुमावदार पुल या त्रिकोणीय आकार में गारे की सहायता से एक-दूसरे के साथ जोड़ा जाता है।

With Islam also came new engineering and scientific principles for the construction of buildings. Prominent among them was the arch and the dome (gumgaj) which gave a total new dimension to architectural style in India. The arch is a device to bridge the space between two pillars or walls. Before the introduction of the arch, a single stone beam was used to bridge this space. The beam could not be very long for it would break and hence the doors and windows in Hindu architecture are very narrow and mandapas crowded with supporting pillars. The arch is however, made up of small blocks of stone held together by mortar to form a triangular or rounded bridge.

गुम्बद या गुम्बज की छत बनाने के लिए एक चौकोर कक्ष के ऊपर बहुत से मेहराबों (तोरणों) को जोड़ा जाता है। मेहराब के इस्तेमाल से इमारतों के दरवाजे और खिड़कियां (झरोखे) बहुत चौड़े तथा लम्बे होते हैं तथा उनके कक्ष स्तम्भों

The gumbaj or dome is the roof constructed by joining many arches above a square room. With the use of the arch the openings of the buildings, doors and windows are very wide and

के अवरोध के बिना फैले होते हैं। इस नव-प्रौद्योगिकी के सिद्धांतों का प्रयोग उस समय विद्यमान प्राचीन सिद्धांतों के साथ किया गया और भारत में हिन्दू-इस्लामी वास्तुकला की एक नई अद्वितीय शैली विकसित हुई, जो विश्व के किसी भी भाग में नहीं पाई जाती है।

इस सांस्कृतिक संग्रह में आप बाहरी व आंतरिक दीवारों की सजावटों और भारत में प्राचीन मकबरों के विकास के उद्‌भव को जान सकते हैं।

मामलुक साम्राज्य (1206-1290)

मामलुक दिल्ली सल्तनत के सबसे प्राचीन शासक हैं, जो कि स्लेव (गुलाम) राजाओं के नाम से भी जाने जाते हैं क्योंकि इनमें से बहुत से या तो गुलाम थे या फिर गुलामों की संतान थे, जो बाद में सुल्तान बने। इनमें सबसे पहला शासक कुतुब-उद्-दीन ऐबक था। वह मोहम्मद गौरी का सेनापति था। कुतुब-उद्-दीन ऐबक ने भारत में पहले महत्वपूर्ण इस्लामी स्मारक का निर्माण करवाया था, जिसका नाम उसी के नाम पर कुतुब मीनार पड़ा। कुतुब मीनार उसकी फतह (जीत) का कीर्ति गान करती है और शुरू में पास ही स्थित कुव्वत-उल-इस्लाम मस्ज़िद के लिए एक मीनार के रूप में काम आती होगी। इल्तुत्मिश, जो कुतुब-उद्-दीन ऐबक का उत्तराधिकारी था, ने पश्चिमी में सिन्ध तथा पूर्व में बंगाल के ऊपर अपने नियंत्रण का विस्तार किया। रज़िया ने बहुत थोड़े समय के लिए शासन किया। जल्दी ही उसका अनुसरण बल्बन द्वारा किया गया।

खिल्ज़ी सल्तनत (ईसवी सन् 1290-1320)

मामलुक साम्राज्य का स्थान एक नए राजाओं के साम्राज्य ने लिया, जिन्हें खिल्जी शासक कहा गया। इनमें अला-उद्-खिलजी प्रसिद्ध योद्धा थे, जो 1296 में सुल्तान बना। उसने अपने साम्राज्य को फैलाया तथा जनता पर शासन करने के लिए प्रशासनिक ढांचे का विस्तार किया, पांडुलिपियों का संग्रह किया तथा व्यापार और भूमि कर का निर्धारण किया। उसने राजस्थान, मालवा और गुजरात के साम्राज्यों को जीतने की कोशिश की तथा चित्तौड़ और रणथम्बौर के किलों को अपने अधीन किया। उसने होयसाला, काकत्या तथा यादवों के साम्राज्यों को हराने के लिए अपनी सेना दक्षिण में भी भेजीं।

तुगलक़ सल्तनत (ईसवी सन् 1320-1413)

ग्यास-उद्-दीन तुगलक ने तुगलक राजवंश की स्थापना की तथा अपनी राजधानी को दिल्ली के एक नए स्थान पर स्थानांतरित किया, जिसे तुगलक़ाबाद के नाम से जाना गया। मोहम्मद-बिन-तुगलक, महत्वपूर्ण तुगलक़ शासकों में से एक था। वह न केवल भारत बल्कि मध्य एशिया को जीतने की महान महत्वाकांक्षा रखता था। उसने अपनी राजधानी का स्थानांतरण दिल्ली से देवगिरी (औरंगाबाद के निकट दौलताबाद) में भी किया। किन्तु उसकी यह योजना सफल नहीं हुई और मोहम्मद-बिन-तुगलक़ वापस दिल्ली आ गया। उसके शासनकाल के दौरान दक्कन में स्वतंत्र साम्राज्यों विजय नगर साम्राज्य तथा बहमनी साम्राज्य का उदय हुआ। मोहम्मद के बाद उसका रिश्ते का भाई फिरोज़ शाह तुगलक राजसिंहासन पर बैठा। उसने अपने शासन काल में जन-कल्याण के बारे में रूचि ली और सिंचाई-व्यवस्था तथा नए शहरों की स्थापना की। उसने अनेक अस्पतालों तथा शैक्षणिक केन्द्रों की स्थापना की और अनेक प्राचीन इमारतों की मरम्मत करवाई। जब तुर्की का सरदार तैमूरलंग अपनी सेना के साथ मध्य एशिया से भारत आया और दिल्ली को लूट लिया तो तत्पश्चात् तुगलक़ों के शासनकाल का अंत हो गया।

tall and the rooms within are open without the obstruction of pillars. These new engineering principles were used together with the older existing principles and a new style of Indo-Islamic architecture evolved unique to India, not to be found in any other part of the world.

In this Cultural Package, you can trace the development of the early tombs in India and the decorations on the exterior and interior walls.

Mamluk Dynasty (1206-1290 C.E.)

The earliest rulers of the Delhi Sultanate were the Mamluks. They were also known as the slave kings because many of them were either slaves or sons of slaves who became Sultans. The first of these kings was Qutub-ud-din Aibak, the General of Muhammad Ghori. Qutub-ud-din Aibak constructed the first important Islamic monument in India which is named after him—the Qutub Minar to commemorate his victory and to serve as a minar for the Quwwat-ul-Islam Mosque. Iltutmish succeeded Qutub-ud-din Aibak, who extended control over Bengal in east and Sind in the west. Iltutmish was followed by his daughter Raziya who ruled for a short while and she was followed by Balban.

Khalji Sultans (1290-1320 C.E.)

The Mamluk Sultans were succeeded by a new dynasty of kings called Khaljis. Among them was the famous warrior Ala-ud-Din Khalji, who became Sultan in 1296 C.E. He expanded his empire and established an administrative system to govern the people, to collect taxes, to assessl and revenue and trade. He tried to conquer the kingdoms of Gujarat, Malwa and Rajasthan and captured the famous forts of Ranthambhor and Chittor. He also sent his army to the South to defeat the kingdoms of the Yadavas, Kakatiyas and the Hoysalas.

Tughlaq Sultans (1320-1413 C.E.)

Ghiyas-ud-din Tughlaq founded the Tughlaq dynasty and shifted his capital to a new site in Delhi, which is now called Tughlaqabad. One of the important Tughlaq rulers was Muhammad-bin-Tughlaq who had great ambitions of conquering not only India but Central Asia. He also transferred his capital from Delhi to Devagiri (Daulatabad near Aurangabad). However, this project was not a success and Muhammad-bin-Tughaq returned to Delhi. During his reign, independent kingdoms emerged in the Deccan—the Vijayanagar and Bahmani kingdoms. After Muhammad, his cousin Firoz Shah Tughlaq came to the throne. He was concerned about the general welfare of his subjects and established new town and irrigation schemes. He set up a number of educational centres and hospitals and repaired many older buildings.

The Turkish chief Timur Leng led an army into India from Central Asia and looted Delhi, thus ending the reign of the Tughlaqs.

सैय्यद वंश (ईसवी सन् 1414-1444)

सन् 1413 में महमूद तुगलक के इंतकाल के पश्चात् 1414 में ख़िज़ खान द्वारा सैय्यद वंश स्थापित किया गया। इस वंश के चार शासकों ने 1444 तक शासन किया। कुछ बहुत उल्लेखनीय कार्य इस काल में नहीं हुआ। ऐसा विश्वास है कि इस वंश के संस्थापक ख़िज़ खान के पुत्र एवं उत्तराधिकार मोइज्जुद्दीन-मुबारक शाह ने यमुना नदी के किनारे 'मुबारकाबाद' नामक शहर स्थापित किया किंतु आज उसके अवशेष देखने को नहीं मिलते हैं।

लोदी राजवंश (ईसवी सन् 1451-1526)

हमलों और आक्रमणों के बाद लोदी राजाओं ने सल्तनत को संगठित करने तथा दृढ़ बनाने की कोशिश की। सिकंदर लोदी ने पूर्व में बंगाल तथा उत्तरी भारत के एक विशाल भाग पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। वह अपनी राजधानी को दिल्ली से आगरा ले आया और प्रजा के हितों के संरक्षण के लिए अनेक आर्थिक और प्रशासनिक उपायों से परिचित करवाया।

अन्य साम्राज्य

पश्चिमी भारत में जब सल्तनत की शक्ति का क्रमशः अंत हो गया तो भारत के विभिन्न भागों में बहुत से नए साम्राज्यों का उद्भव हुआ। इनमें से कुछ साम्राज्य मूलतः सल्तनत के अधिकार क्षेत्र में आते थे। अर्थात् सल्तनत का ही भाग थे, जो कि बाद में स्वतंत्र हो गए। अहमद शाह ने अहमदाबाद नगर की स्थापना की और सारे गुजरात पर अपने नियंत्रण का विस्तार किया। अहमद शाह ने जामा मस्ज़िद सहित विभिन्न इमारतों का निर्माण करवाया। जामा मस्ज़िद भारत के खूबसूरत ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। तुगलक़ों के अधीन बहमनों ने 15वीं सदी में कर्नाटक में बीदर तथा गुलबर्ग राजधानी नगरों के साथ एक स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना की। उन्होंने वहां गुलबर्ग की जामा मस्ज़िद सहित अनेक खूबसूरत इमारतों का निर्माण करवाया।

कुतुब शाह राजवंश ने 1512 ईसवी सन् में गोलकुण्डा की पथरीली पहाड़ियों पर एक विशाल किले तथा हैदराबाद के आसपास अनेक मकबरों और इमारतों का निर्माण करवाया। बीजापुर दक्कन सल्तनत के एक गढ़ के रूप में उभरा तथा वहां गोल गुम्बज और जामा मस्ज़िद जैसी अनेक इस्लाम स्मारकों की स्थापना की गई। (गोल गुम्बज सुल्तान मोहम्मद आदिल शाह का मक़बरा है, जिसकी मृत्यु 1657 ई. में हुई थी।)

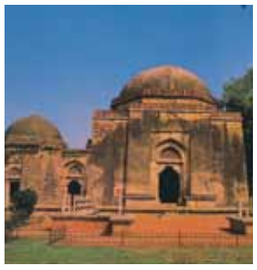

बीजापुर के शासकों का उद्गम स्रोत तुर्की और ईरानी हैं और उन्होंने कर्नाटक में अपनी राजधानी बीजापुर के आसपास वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली को विकसित किया।

इसके अतिरिक्त जब दक्षिण में बहमनी साम्राज्य का पतन हो गया तो विजयनगर का साम्राज्य शक्ति में आ गया। विजयनगर साम्राज्य के इतिहास के उस काल का सबसे महत्वपूर्ण शासक कृष्णदेव राय था। (ई० 1509-30)। प्राचीन यात्रियों तथा सौदागरों ने विजयनगर साम्राज्य की हम्पी स्थित राजधानी का वर्णन किया है। वह अपने वैभव तथा समृद्धि के लिए प्रसिद्ध थी।

The Sayyaid Dynasty (1414-1444 C.E.)

After Muhammad Tughlaq's death in 1413 C.E., Khizr Khan, the governor of Punjab founded the Sayyid Dynasty. Four rulers of the dynasty reigned in succession till 1444 C.E. There was no much significant work achieved during this period. It is said that Khizr Khan's son and successor, Muizud-Din-Mubarak-Shah founded the City of Mubarakabad along the river Jamuna, but no trace of it remains now.

The Lodi Dynasty (1451-1526 C.E.)

The Lodi kings tried to consolidate the Sultanate after the attacks and invasions. Sikandar Lodi managed to control a large portion of northern India and as far as Bengal in the east. He moved the capital from Delhi to Agra and introduced several economic and administrative measures to secure the protection of his subjects.

Other Kingdoms

In Western India, as the power of the Sultanate gradually declined, a number of new kingdoms arose in various parts of India. Some of them were originally provinces of the Sultanate which gradually became independent. Ahmed Shah founded the city of Ahmedabad and extended his control over Gujarat. Ahmed Shah built various buildings including the Jama Masjid making it one of India's beautiful historical sites. Under the Tughlaqs, the Bahmanis established an independent kingdom with their capital cities of Gulbarga and Bidar in Karnataka in the 15th century. Here they constructed several beautiful buildings including the Jama Masjid of Gulbarga.

Qubut Shahi Dynasty built a huge fortress on the rock hills of Golconda in 1512 C.E. and several other tombs and buildings in and around Hyderabad.

Bijapur became a stronghold of the Deccani Sultanate and several Islamic monuments were erected here such as the Jama Masjid and the Gol Gumbaz. (The tomb of Sultan Mohammad Adil Shah who died in 1657 C.E.). Bijapur rulers were of Turkish and Iranian origin and evolved a distinctive style of architecture around their capital of Bijapur in Karnataka.

Further south while Bahmani kingdom was declining, the kingdom of the Vijayanagar became powerful. The most important ruler of this period of Vijayanagar's history was Krishnadevaraya (1509-1530 C.E.). The beautiful capital at Hampi was described by early travellers and merchants and was renowned for its wealth and grandeur.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

इस शैक्षणिक संग्रह में दिए गए 24 चित्रों को कक्षा अथवा स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित किया जा सकता है। इन चित्रों को शीर्षक तथा वर्णन सहित कार्डबोर्ड पर लगाया जा सकता है। भारतीय कला का शैक्षणिक मूल्य बताने वाली गतिविधियों के साथ इन चित्रों का गहन अध्ययन किया जा सकता है और छात्रों को नीचे सुझाई गई रचनात्मक गतिविधियों में जोड़कर पढ़ाई में आनन्द का अनुभव कराया जा सकता है।

कृपया इस विभाग की गतिविधियों के लिए सांस्कृतिक इतिहास भाग एक, दो तथा तीन के शैक्षणिक संग्रहों का एक साथ उपयोग करें।

भारत का सांस्कृतिक मानचित्र

भारत के मानचित्र की एक विशाल रूपरेखा पर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों तथा जगहों पर निशान लगाइए। सांस्कृतिक इतिहास भाग एक, दो तथा तीन के चित्रों में दर्शाए गए भवनों का सही स्थान खोजिए।

धर्मों को समझना (व्याख्या)

सभी धर्म एक समान विचारों पर आधारित हैं और वे एक अच्छा तथा समृद्ध जीवन जीने में हमारी सहायता करते हैं। धर्मों की बाह्य अभिव्यक्तियां जैसे–धार्मिक कृत्य, रीति-रिवाज आदि ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक और यहां तक की भौगोलिक कारणों की वजह से भी एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। उदाहरण के तौर पर यहां बसंत को मनाने के लिए विभिन्न प्रकार के त्यौहार हैं जैसे–पोंगल, मकर संक्रांति, बसंत पंचमी, होली और अन्य। अपने छात्रों को भारत के धर्म और लोगों का अध्ययन करने के लिए आमंत्रित कीजिए तथा निम्नलिखित धर्मों तथा विश्वासों पर जानकारी एकत्रित कीजिए–

बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और पारसी धर्म आदि।

- सांस्कृतिक इतिहास भाग एक, दो और तीन में से धार्मिक स्मारकों, शिल्पों (प्रतिमाओं) और देवी-देवताओं के चित्रों का चयन कीजिए।
- सभी धर्मों के त्यौहारों का एक वार्षिक कैलेंडर (पंचांग) तैयार कीजिए और प्रत्येक त्यौहार को मनाए जाने के तरीके का वर्णन कीजिए।
  - दिनांक
  - कहानी, त्यौहार से जुड़ी पौराणिक-कथा
  - कारण, मनाने का उद्देश्य
  - वेशभूषाएं
  - खान-पान
  - गीत और नृत्य

These 24 pictures given in this Cultural Package can be displayed in the classroom or at any prominent place in the school. The pictures may be stuck on cardboard along with the title and description. The pictures can also be studied in depth, with activities that bring out the educational value of ensuring students' enjoyment in learning by involving them in some creative activities in this section.

Please use Cultural Package 1, 2 and 3 together, for the activities in this section.

Cultural Map of India

On a large outline map of India mark important historical sites and places. Find the location of buildings given in the pictures in Cultural History 1, 2 and 3.

Understanding Religions

All religions are based on similar concepts and help us to lead better and richer lives. The outward manifestations of regions such as rituals, customs, differ from one to another for historical, economic, political and even geographical reasons. For example, there are a variety of festivals, celebrated all over India during the months of January, February, March, which involve the whole community, such as Pongal, Makarsankranti, Vasant Panchmi, Holi and others.

Invite your students to study the religions and people of India.

Collect information on the following faiths and religions :

Buddhism, Christianity, Hinduism, Islam, Jainism, Sikhism, Zoroastrianism, and others.

- Choose pictures from Cultural History 1, 2 and 3 on religious monuments, sculptures and paintings on gods and goddesses.
- Collect quotations which contain the essence of the philosophy of each religion.
- Collect pictures of prayer services, ritual and customs of each religion.
- Make an annual calendar of festivals of all religions and describe how each is celebrated
  - Date/month
  - Story, myth related to festival
  - Reason, purpose of celebration
  - Activities connected with the festival
  - Costumes
  - Food
  - Songs and Dances

– प्रत्येक समुदाय के महत्वपूर्ण संतों, अध्यापकों और सदस्यों की जीवनी लिखिए। किसी एक धर्म, जैसे–ईसाई धर्म को लीजिए और निम्नलिखित संतों और व्यक्तियों के जीवन पर कहानियां लिखिए–

  – ईसा मसीह
  – सेण्ट ज़ेवियर, गोवा
  – मदर टेरेसा

– लोगों से साक्षात्कार तथा अध्ययन करके सर्वेक्षण कीजिए कि एक ही त्यौहार भारत के विविध भागों में किस प्रकार मनाया जाता है–

– उत्तर, दक्षिण, पूर्ण, पश्चिम और मध्य भारत।

– मौसमी त्यौहार, धर्म, राष्ट्रीय अवकाश और अन्य।

– विविध धर्मों के साथ जुड़े प्रतीकों को एकत्रित कीजिए और उनका अर्थ या महत्व खोजिए।

– निम्नलिखित विषयों को कालक्रमानुसार समझाने के लिए सांस्कृतिक इतिहास भाग एक, दो तथा तीन में दिए गए चित्रों को प्रदर्शित कीजिए–

  1) हिन्दू मंदिरों का विकास
  2) बौद्ध मूर्तिकला का विकास
  3) मक़बरे का विकास

सुलेख और चित्र

आपको जो कविता पसंद हो, उसे चुनिए और अपनी अच्छी लिखावट में उसे एक साफ-सुथरे व नए पृष्ठ पर लिखिए। फिर तीनों शैक्षणिक संग्रहों में दी गई सचित्र पांडुलिपियों के उदाहरणों को देखते हुए पृष्ठ के किनारों पर डिज़ाईन और चित्र तैयार कीजिए। आप कुरान या फिर जैन अथवा बौद्ध पांडुलिपियों के चित्रों की तरह रेखागणितीय डिज़ाईनों का उपयोग कर सकते हैं (चित्रों 8, 22 और 23)।

प्रश्नावली

आपके जिन छात्रों ने इन चित्रों का अध्ययन किया है उनके साथ लिखित/मौखिक प्रश्नावली आयोजित कीजिए।

— Write the stories of important saints, teachers and members of each community.

  Take one religion, such as Christianity and write stories on the life of –

  — Jesus Christ
  — St. Xavier, Goa
  — Mother Teresa

— Make a survey by reading and interviewing people on how the same festival is celebrated in different parts of India.

— North, South, East, West and Central India.

— Seasonal festivals, religions, national holidays and others.

— Collect symbols associated with different religions and find their meaning or significance.

— Exhibit pictures provided in Cultural History, 1, 2 and 3 to illustrate the following themes in chronological sequence.

  1) Evolution of the Hindu Temple
  2) Evolution of the Buddhist Sculpture
  3) Evolution of the Tomb.

Calligraphy and Illustrations

Choose a poem that you like and write it in your best handwriting on a clean new page. Then looking at the examples of illustrated manuscripts given in these packages, prepare a border design and drawings. You can use geometric designs as in the example of the Quran or illustrations like those in Jain or Buddhist manuscripts. (Picture 8, 21 and 22)

Quiz

Organize a written/verbal quiz with your students who have studied these pictures.

कुछ नमूनों के प्रश्न

परिभाषित करें–

मस्ज़िद
जामा मस्ज़िद
ईदगाह
शिखर
स्तूप
तोरण (मेहराब)
गुम्बद
मक़बरा
मंडप

किसने बनाया है?

कुतुब मीनार
तुगलक़ाबाद का किला
गोलकुण्डा का किला
सिकन्दर लोदी का मक़बरा

ये किस राज्य में स्थित है?

हम्पी
माउण्ट आबू
चम्बा
कुतुब मीनार

निम्न की राजधानियों के स्थल बताइए–

विजयनगर साम्राज्य
बहमनी साम्राज्य
तुगलक़ साम्राज्य
लोदी साम्राज्य
अहमद शाह का राज्य

निम्नलिखित को बनाने के लिए किन सामग्रियों का उपयोग किया गया है–

कुतुब मीनार
माउण्ट आबू के जैन मंदिर
ग्यास-उद्-दीन तुगलक़ का मक़बरा
अलाई दरवाज़ा

निम्नलिखित के महत्वपूर्ण तीर्थ केन्द्रों के नाम बताइए

हिन्दू
बौद्ध
जैन
ईसाई
यहूदी
इस्लाम
पारसी
सिख

Some sample Questions.

Define.

Masjid
Jama Masjid
Id-gah
Shikara
Stupa
Arch
Dome
Tomb
Mandapa

Who built?

Qutub Minar
Tughlaqabad Fort
Golconda Fort
Sikandar Lodi's Tomb

In which state do we find?

Hampi
Mount Abu
Chamba
Qutub Minar

Name the Capital of :

The Vijayanagar Empire
The Bahamini Kingdom
The Tughlaq Empire
The Lodi Empire
Ahmed Shah's Kingdom

What materials were used to built?

Qutub Minar
Jain Temple, Mount Abu
Ghiyas-ud-din Tughlaq's Tomb
Alai Darwaza

Name important pilgrimage centres

Hindu
Buddhist
Jain
Christian
Jew
Muslim
Parsi
Sikh

विमान
Vimana

यह संरचना मूलत: स्थल योजना में चौकोर अथवा आयताकार होती है और यह पिरामिडीय ढांचे की तरह ऊपर को कम होती जाती है। इसे कई मंजिलों तक ऊंचा बनाया जाता है।

'शास्त्रों के अनुसाार' विमान विविध आनुपातिक परिणामों के साथ निर्मित मंदिर का नाम है।

This is a structure which is basically square or rectangular in ground plan. It rises several stories high and is pyramidal in shape.

Vimana is the name of the temple built according to the proportionate measurements laid down in the *Shastras.*

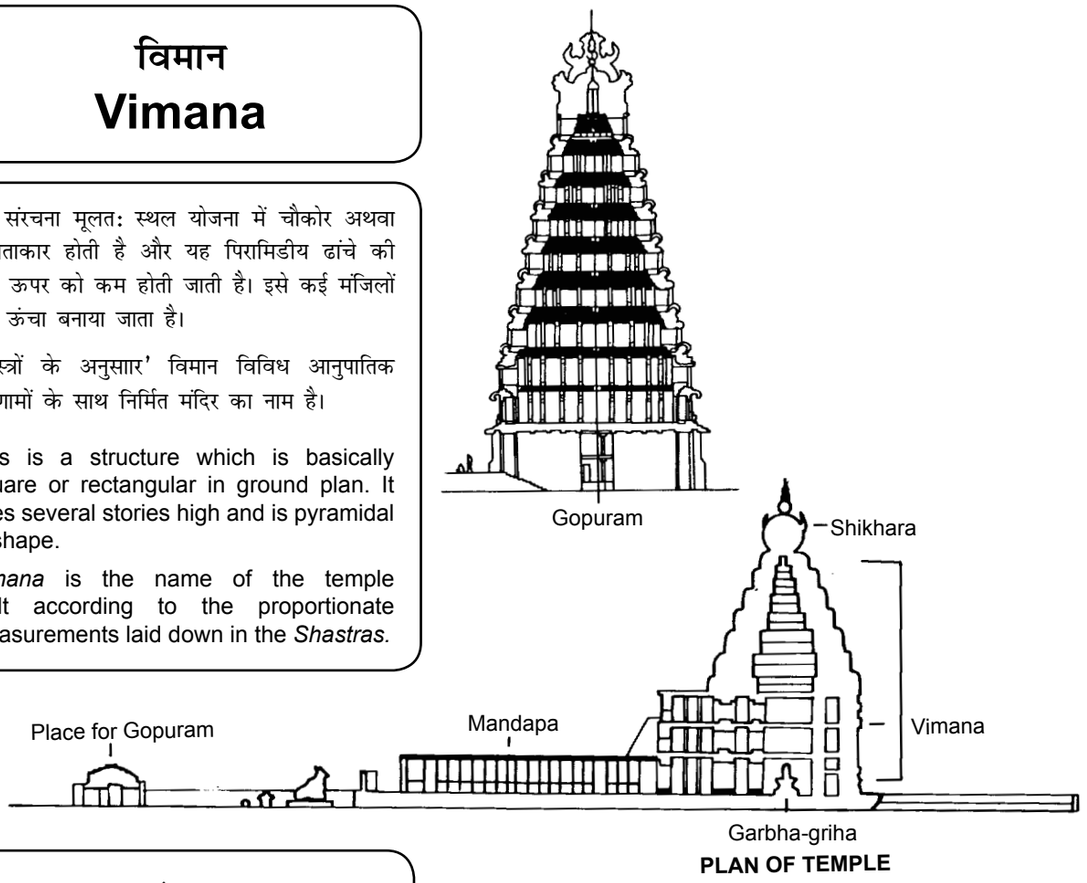

PLAN OF TEMPLE

गोपुरम
Gopuram

'गोपुरम' दक्षिण भारतीय मंदिरों का प्रवेश द्वार है। गोपुरम शब्द का उद्भव वैदिक काल के ग्रामों के गो-द्वार से हुआ और धीरे-धीरे यही गो-द्वार मंदिरों के विशाल प्रवेश द्वार बन गए, जिन्हें यात्रीगण बहुत दूर से भी देख सकते थे।

'गोपुरम' की भवन-योजना आयताकार होती है। गोपुरम की पिरामिडीय बनावट को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसकी सबसे नीचे की दो मंजिलें ऊँचाई में बराबर बनाई जाती हैं।

Gopuram is a South Indian temple gateway. *Gopuram* derived its name from the 'cow-gate' of the villages of vedic period and subsequently became the monumental entrance gate to the temple and can be seen from a distance.

The *gopuram* is oblong in plan. The two lowermost stories are vertical in order to give a stable foundation for the pyramidal structure of the *gopuram.*

मंडप
Mandapa

'मंडप' सामान्यत: एक स्तंभयुक्त सभागृह अथवा ड्योढ़ी (द्वारा मंडप) होता है, जहां पर भक्तगण मंदिर की देवी, देव अथवा ईश्वरीय प्रतीक को अपना भक्ति भाव समर्पित करने से पहले एकत्रित होते हैं।

'मंडप' को सीधे गर्भ-गृह से भी जोड़ा जाता है। इस मंडप को पूर्ण रूप से या इसका कुछ भाग बंद किया जा सकता है अथवा मंडप को बिना दीवारों के भी बनाया जा सकता है।

कुछ मंदिरों में उदारणार्थ–मामल्लापुरम में, समुद्र तट पर स्थित मंदिर के मंडप तथा कांचीपुरम स्थित कैलाशनाथ मंदिर में मंडप मुख्य तीर्थ मंदिर से अलग बने हुए हैं।

Mandapa is usually a pillared hall or a porch—like area where devotees assemble before moving into the sanctum sanctorum of the temple.

A *mandapa* may be attached to the *garbha-griha* directly. The structure may be entirely or partially enclosed or without walls.

In some temples like the Shore Temple at Mamallapuram and the Kailasanatha temple, the *mandapa* is separate from the main shrine.

शिखर
Shikhara

सामान्यतया, मंदिर शब्द सुनते ही हमारे समक्ष गर्भ-गृह की चोटी पर बनी ऊंची अधि-रचना आ जाती है। 'शिखर' का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत की चोटी' है, जो विशेष रूप से भारतीय मंदिर की अधि-रचना का पर्याय है।

विद्वानों का मत है कि 'शिखर' का अर्थ 'सिर' है और इसे 'शिखा' शब्द से ग्रहण किया गया है, जिसका अर्थ सिर के पीछे एक रूढ़िवादी हिन्दू द्वारा रखे जाने वाला बालों का गुच्छा है।

Generally, the accepted form of the temple is the high superstructure built on top of the *garbha-griha.*

Shikhara which means 'mountain peak' is the superstructure of the Indian temple. Scholars mention that the Shikhara meaning 'head' has been derived from 'Shikha', the tuft of hair worn by an orthodox Hindu on the crown of the head.

गर्भ–गृह
Garbha-Griha

गर्भ-गृह, निश्चित रूप से एक गहरा अंधेरा कक्ष होता है, जहां मंदिर की प्रमुख प्रतिमा को स्थापित किया जाता है। यह कक्ष वास्तुकला योजना में चौकोर अथवा कभी-कभी आयताकार होता है और कभी-कभार बहुभुजी अथवा गोलाकार होता है।

अपने नाम के अनुसार यह इमारत 'गर्भ' की भांति मानी जाती है तथा अनन्त काल से गर्भ-गृह का यह स्वरूप अपरिवर्तित है। नाम तथा रूप से भी गर्भ-गृह प्राथमिक महत्व का स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ भक्तगण अपने सांसारिक विचारों को थोड़ी देर के लिए भूलकर ईश्वर से समागम करते हैं।

The Garbha-Griha is essentially a small dark chamber where the main deity of the temple is established. It is square in plan or very rarely rectangular or polygonal or circular.

It is believed to be the "womb" and has remained unchanged throughout the ages. By its name and form, the *garbha-griha* is a place of primary significance. This is the place towards which the devotee proceeds momentarily leaving behind all worldly thoughts to be in communion with the supreme being.

वेदिका
Vedika

पवित्र स्थल या वस्तु की पवित्रता बनाए रखने हेतु उसके चारों ओर निर्मित सतह से जरा ऊंचे घेरे या रेलिंग को वेदिका कहते हैं।

A railing or fence protecting a sacred structure or a spot or object of veneration is known as Vedika.

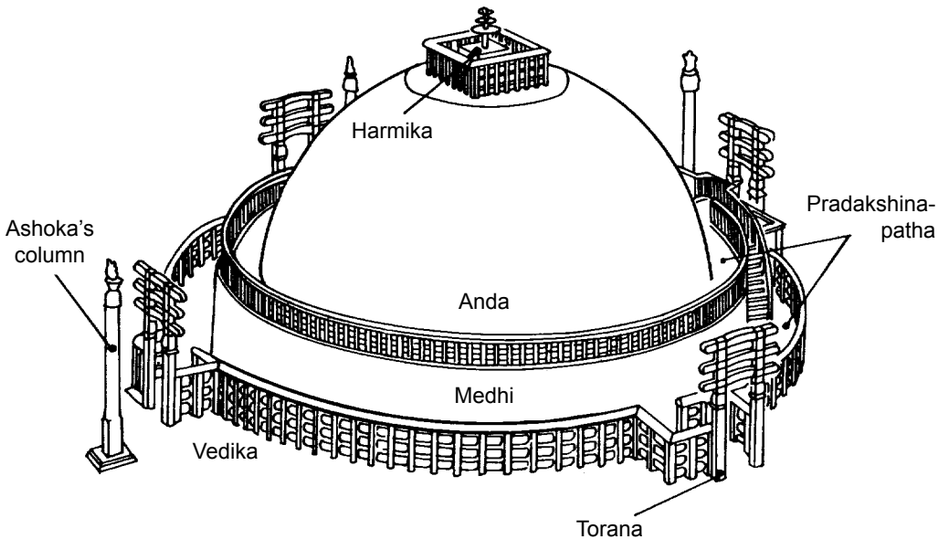

PLAN OF STUPA

मेधि
Medhi

स्तूप के चारों तरफ के ऊंचे उठे पथ (पटरी) को मेधि कहते हैं। इसे स्तूप की प्रदक्षिणा के लिए उपयोग में लाया जाता है।

The berm of a stupa is known as Medhi. The berm (medhi) level of the stupa is used for circumambulation.

हर्मिका
Harmika

स्तूप के अंड भाग के शीर्ष की चौकोर रेलिंग (घेरे) को हर्मिका कहते हैं। यह स्तूप के एक महत्वपूर्ण भाग यष्टि को घेरे रहती है।

The square superstructure in the form of a railing on top of the dome of stupa is known as Harmika. It encloses the pole Yasti, an important part of the stupa.

प्रदक्षिणा पथ
Pradakshinapatha

मंदिर या पूजा स्थल के चारों तरफ बने सामान्य सतह से ऊंचे पथ को प्रदक्षिणा पथ कहते हैं। श्रृद्धालुगण इस पथ पर घड़ी के अनुरूप बायीं दिशा से प्रदक्षिणा प्रारंभ करते हैं।

A path used for clockwise circumambulation surrounding an image, shrine or building is known as Pradakshinapatha.

तोरण
Torana

तोरण मूलत: प्रवेशद्वार होता है। इसके दो उर्ध्वाकार स्तंभों पर तीन आड़े प्रस्तर पाद आधारित रहते हैं। इन स्तंभ के बीच से निकल कर श्रद्धालुगण स्तूप में प्रवेश करते हैं। इसकी दोनों तरफ वन्य एवं वनस्पति जगत के सजावटी प्रतीक उत्कीर्ण किए जाते हैं। साथ ही भवन निर्माण की बारीकियां भी होती हैं।

The Torana is basically a gateway. It consists of two upright pillars supporting three architraves that makes an entry space through which the devotee gains an access to the stupa. Both its sides are carved with the decorative motifs of figures, animals, plant life and architectural details.

चांसेल
Chancel

चर्च में मुख्य वेदी के पास के स्थान को चांसेल कहते हैं। यह पादरियों एवं वृन्द गान समूह के लिए नियत रहता है। अमूमन यह स्थान जाली के माध्यम से शेष भवनों से विभक्त किया जाता है।

In a church near the altar, the space which is reserved for the clergy and choir, set off from the nave steps, and occasionally screened off is known as Chancel.

वेदी खंड
Altarpiece

चर्च की मुख्य वेदी की पिछली तरफ किंतु कुछ ऊपर वेदी खंड होता है। यह या तो चित्रित होता है और या फिर उत्कीर्ण। इस का चूलदार पंखों वाला एक फलक होता है या तीन फलक। इसके दोनों पार्श्व चित्रित होते हैं।

An Altarpiece is a painted or carved work of art placed behind and above the altar of a church. It may be a single panel, three panels or polytych having hinged wings. Both its sides are usually painted.

प्रार्थनालय
Chapel

चर्च के उस कक्ष को प्रार्थनालय कहते हैं जिसमें संत को समर्पित वेदी रहती है।

The Chapel is a compartment in a church containing an altar dedicated to a saint.

बेलफ्राई
Belfry

चर्च के घंटे वाली मीनार को बेलफ्राई कहते हैं।

The Belfry is a tower for the church bell.

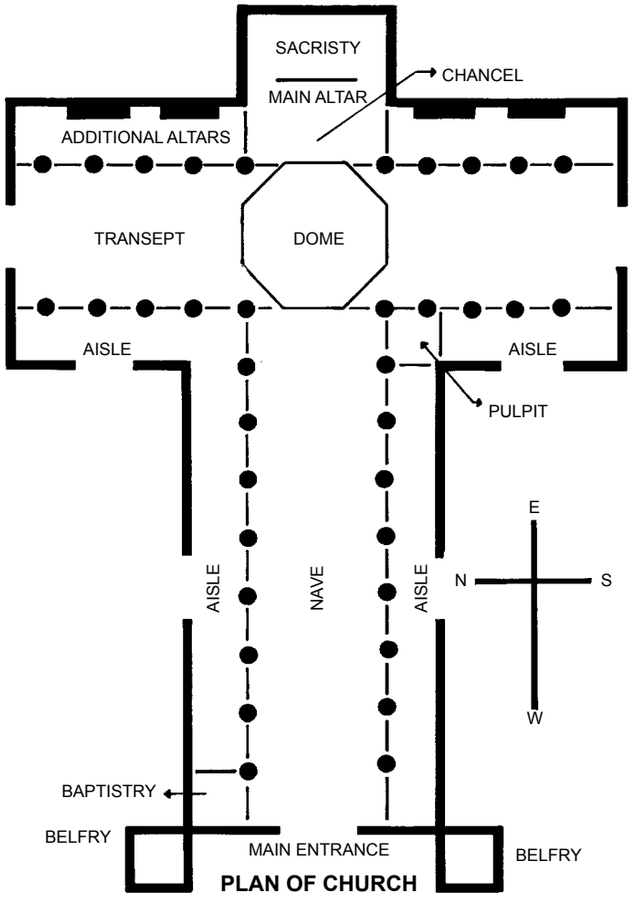

PLAN OF CHURCH

गलियारा
Aisle

चर्च के मध्य एवं अनुप्रस्थ भाग के बराबर वाले भाग को गलियारा या पार्श्ववीथी कहते हैं। यह स्तंभों के माध्यम से इनसे अलग रहता है।

As Aisle is a section of a church alongside the nave and transept and is separated from these by rows of columns.

ट्रैनसेप्ट
Transept

क्रूसाकार चर्च में मुख्य आले तथा चांसेल के मध्य भाग को ट्रैनसेप्ट कहते हैं। इसका डिजाइन बहुत ही सुव्यवस्थित होता है।

The Transept is a well-designed part in a cross-shaped church. In the design, it is an arm forming a right angle with the nave, usually inserted between the nave and the chancel.

सैकरिस्टि
Sacristy

चांसेल के समीप के कक्ष को सैकरिस्टि कहते हैं। यहां पादरी के पवित्र परिधान रखे रहते हैं तथा पादरी यहीं पवित्र परिधनों को धारण करते हैं।

The Sacristy is a room near the chancel where sacred vestments are kept. The priests wear these ceremonial robes in this room.

बसिलिका
Basilica

रोमन काल में बसिलिका से तात्पर्य एक विशाल सम्मेलन कक्ष से होता है। प्रारंभिक ईसाईयों द्वारा अपने चर्चों के लिए भी यह शब्द इस्तेमाल किया जाता था। विशेष दर्जा रखने वाले महत्वपूर्ण कैथोलिक चर्चों के लिए भी यह शब्द प्रयोग में लाया जाता है।

In the Roman period, the word refers to the function of the building—a large meeting hall—rather than to its form which may vary according to its use. The term was used by the early Christians to refer to their churches. The term is also used for important Catholic churches enjoying special status.

दीक्षा कक्ष
Baptistery

चर्च का कोई भाग या उसके साथ का कोई भवन दीक्षा कक्ष हो सकता है। प्राय: यह वृत्ताकार या अष्टकोणीय होता है। इसमें दीक्षा की शपथ दी जाती है। यहां दीक्षा-स्थल तथा पत्थर या धातु का बना एक पात्र होता है जिसमें धार्मिक कार्यों हेतु पवित्र जल रखा जाता है।

The Baptistery may be a building or part of a church. Usually this place is round or octagonal in shape. The sacrament of baptism is administered here. It contains a baptismal font, a receptacle of stone or metal that holds the water for the rite.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

1. ग्वालियर का किला, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

ग्वालियर का किला सपाट चोटी तथा मुड़े हुए किनारों वाली एक बलुआ पत्थर की ऊंची और अलग सी पहाड़ी पर स्थित है। यह लंबी एवं संकरी पहाड़ी आस-पास के समतल मैदानों से लगभग 300 फीट ऊँचाई तक जाती है। यह उत्तर से दक्षिण तक लगभग 3 कि.मी. लम्बी तथा पूर्व से पश्चिम तक लगभग 600 से 2800 फीट चौड़ी है। पहाड़ी के किनारों पर कुछ इस प्रकार से पलस्तर लगाया गया है कि किले की दीवार पहाड़ी के अन्दर से ही उभरती हुई सी प्रतीत होती है।

ग्वालियर का नगर दुर्ग (किला) दसवीं शताब्दी में निर्मित हुआ। सन् 950 में यहां सूरज पाल द्वारा हिन्दू राजवंश संस्थापित हुआ। सन् 1129 में जब यह राजवंश लुप्त हो गया तो इसके पश्चात् परिहार राजवंश आया जिसका सन् 1232 में दिल्ली के बादशाह इल्तुत्मिश द्वारा किला जीत लेने तक किले पर आधिपत्य रहा। सन् 1398 में बीरसिंह देव नाम तोमर राजपूत ने तैमूर की चढ़ाई द्वारा फैली अशांति का लाभ उठाया। वह ग्वालियर का राजा बन गया और उसने तोमर राजवंश की स्थापना की। सन् 1486 में मानसिंह ग्वालियर का राजा बना जो सभी तोमर शासकों में सबसे शक्तिशाली था। सन् 1516 में उसकी मृत्यु हुई और उसके पश्चात् उसके पुत्र विक्रमादित्य ने सन् 1518 तक ग्वालियर पर शासन किया। सन् 1518 में इब्राहीम लोदी ने अपनी दो वर्ष की घेरेबंदी सफलतापूर्वक पूरी की और दिल्ली सल्तनत के लिए ग्वालियर का किला जीत लिया। मुगल शासकों का अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक किले पर आधिपत्य रहा और सन् 1754 में मराठों ने किले को अपने अधिकार में ले लिया।

अगले 50 वर्षों तक अनेक राजवंशों द्वारा किले पर आक्रमण होते रहे और अंत में सिन्धिया राजवंश ने इस पर आधिपत्य जमा लिया।

इस ऐतिहासिक काल के दौरान किले के नीचे और किले के अन्दर बहुत-सी इमारतें बनाई गईं, जिसमें मंदिर और मुस्लिम महल शामिल हैं जैसे मानसिंह महल, गुर्जरी महल, सास-बहू मंदिर, तेली का मंदिर, आदि।

1. Gwalior Fort, Gwalior, Madhya Pradesh

The fortress stands on a flat-topped, sheer-sided and isolated sandstone hill. The hill rises up to 300 feet above the surrounding plains, and is long and narrow, measuring approximately 3 kms. from north to south and from 600 to 2,800 feet, east to west. The sides of the hill are revetted so that the fort wall seems to grow out of the hillside.

The citadel of Gwalior had been inhabited from the tenth century. In 950 C.E. a Hindu dynasty was founded there by Suraj Pal. When this became extinct in 1129 C.E., it was followed by the Parihari dynasty, which held the citadel until it was caputred by the Delhi emperor Iltutmish in 1232 C.E. In 1398 C.E., Bir Singh Deo, a Tomar Rajput, took advantage of the turmoil caused by Timur's invasion. He became the king of Gwalior and established the Tomar dynasty. Man Singh who came to power in 1486 C.E., was the greatest of the Tomar rulers. He died in 1516 C.E. and his son Vikramaditya controlled Gwalior until 1518 C.E., when Ibrahim Lodi successfully concluded a two year siege and won back the fortress for the Delhi sultanate. The Mughals held the fort till the mid-eighteenth century, until the Marathas conquered it in 1754 C.E.

For the next 50 years, the fort was invaded by different dynasties till it was taken over by the Scindias.

During this long and varied history, many buildings were erected in or below the fortress, including palaces and temples which include Man Singh Palace, Gujari Mahal, Saas-Bahu Temple, Teli ka Mandir.

2. लक्ष्मी नारायण मंदिर, चम्बा, हिमाचल प्रदेश

चम्बा और कुल्लू में 13वीं शताब्दी के पूर्व के समय के कुछ थोड़े-से छोटे मंदिर हैं। ये मंदिर इस समय की हिमालयी वास्तुकला के उत्तम उदाहरण हैं और अपने सादे डिजाइन और *विमान* की मनोहर रेखाओं के कारण स्मरणीय हैं। *शिखरों* की छतें और ड्योढ़ियां (द्वार मंडप) व्यावहारिक ढंग से ढलुवां बने हुए हैं। इसी कारण हिमपात होने पर इन पर बर्फ इकट्ठी नहीं होती एवं ढलुवां होने के कारण नीचे सरक कर गिर जाती है।

प्रस्तुत चित्र में, हम चम्बा स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर को देख सकते हैं। कहा जाता है कि साहिला वर्मन (सन् 920-40 सा: काल) द्वारा शहर की नींव रखे जाने के कुछ ही समय पश्चात् यह मंदिर बनवाया गया था। इस मंदिर में सफेद संगमरमर से बनी और स्वर्ण आभूषणों से अलंकृत भगवान विष्णु की प्रतिमा है।

2. Lakshmi Narayan Temple, Chamba, Himachal Pradesh

There are quite a few small temples at Chamba and Kulu, dating back to the early 13th century C.E. These temples are good examples of Himalayan architecture of the period and noteworthy for their simple design and the graceful lines of the *vimana.* The sloping roofs of the *shikaras* and the porticos are perhaps utilitarian, as the snow does not collect on such structures but slides down, thus keeping the roof clear of snow and water.

In this picture, we see Lakshmi Narayan Temple, located at Chamba. The temple is said to have been founded by Sahila Verman (920-40 C.E.) shortly after the foundation of the town was laid. The temple contains an image of Lord Vishnu in white marble adorned with gold ornaments.

3. विठ्ठल मंदिर और रथ, हम्पी, कर्नाटक

हम्पी, कर्नाटक के बेल्लारी जिले में तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। हम्पी का इतिहास नवप्रस्तर काल और साथ ही चालुक्य, चोल तथा पांडय राजवंशों से जुड़ा हुआ है। यहां पर, सन् 1336 में विजयनगर अर्थात ''विजय के नगर'' को हरिहर और बुक्का नामक दो भाईयों ने स्थापित किया, जिन्हें जनप्रिय रूप में हुक्का और बुक्का नाम से जाना जाता है। हालांकि, विजयनगर के सर्वाधिक शक्तिशाली, लोकप्रिय और विशिष्ट राजा - कृष्णदेव राय थे, जिन्होंने सन् 1509 से सन् 1530 तक शासन किया। वे स्वयं एक कवि थे और नृत्य, संगीत कला तथा वास्तुकला के महान संरक्षक थे।

हम्पी में बहुसंख्य इमारतें बनाई गईं, जिनमें बड़े गोपुरम, स्तंभयुक्त मंडप और मंदिर रथ सम्मिलित हैं। प्रस्तुत चित्र में चबूतरे पर नक्काशीदार शिल्प से अलंकृत मंदिर, मंडप और सुंदर ढंग से तक्षित स्तंभ देखे जा सकते हैं। अग्र भाग में, चित्र के दाहिनी ओर, आप पत्थर पर उत्कीर्णित पहियों के साथ एक संपूर्ण रथ देख सकते हैं। आज बहुत से इतिहासकार और वास्तुकलाविद् इस स्थान का अध्ययन करने हेतु हम्पी की प्राचीन राजधानी, उसके महलों, सड़कों, मंदिरों और अन्य इमारतों की खुदाई कर रहे हैं।

3. Vithala Temple and Ratha, Hampi, Karnataka

Hampi is situated on the southern bank of the Tungabhadra river in Bellary district of Karnataka. The history of Hampi is associated with the Neolithic age and subsequently with the various Chalukyas, Cholas and the Pandyas. Here, Vijayanagar, “the city of victory” was founded by two brothers, Harihara and Bukka, popularly known as Hukka and Bukka in 1336 C.E. However, the most powerful, popular and distinguished King of Vijayanagar was Krishnadeva Raya who ruled from 1509 to 1530 C.E. He was a poet and a great patron of dance, music, art and architecture.

Numerous structures are built at Hampi which include large *gopurams,* pillared *mandapas* and temple chariots. In this picture, the temple, *mandapas* and carved pillars are seen decorated with bas relief sculptures on the platform. In front, on the right of the picture, you can see a complete *ratha* with wheels carved in stone. Today many historians and archaeologists are excavating the site to study the ancient capital of Hampi, its palaces, roads, temples and other buildings.

4. नरसिंह, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

दक्षिण व उत्तरी विधाओं की तुलना में विजयनगर के कलाकारों ने अपने मंदिरों में ज्यादा उभार वाली उत्कीर्ण कला का प्रयोग बहुत ही कम किया है। विजयनगरीय विशेष मूर्ति शैली में राज्य के विभिन्न भागों में विशाल एकाश्म उत्कीर्ण-शिल्प मिलते हैं। लेपाक्षी मंदिर के उत्तर-पूर्वी हिस्से में विशाल नंदी तथा गणेशजी-समर्पित मंदिर में गणेशजी की विशाल आकृति उस युग के सुंदर कला-नमूने हैं।

संभवत: इन से भी ज्यादा भव्य तो विजयनगर में बैठे हुए उग्र नरसिंह का मूर्ति-शिल्प है। यह साढ़े छ: मीटर ऊँची है तथा कृष्णदेव राय के शासनकाल में सन् 1528 में निर्मित की गई थी। एक प्रकार से यह विशाल आकृति मानवीय भक्तों के सम्मुख विशालकाय लगती है।

ऐसी धारणा है कि मूलत: नरसिंह देवता की गोद में बैठी लक्ष्मी की आकृति भी थी।

यह चारदीवारी से घिरे स्थान में स्थित है एवं पूर्वाभिमुखी है। नरसिंह के मस्तक के ऊपर सात फनों वाले शेषनाग के सिर को भी देखा जा सकता है।

यद्यपि यह मूर्ति-शिल्प काफी क्षतिग्रस्त हो गया था पर पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इसका पुनरूद्धार कर दिया गया।

4. Narasimha, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

In comparison to many Deccan and Northern schools, the sculptors of Vijayanagar used carvings sparingly on their temples. A very disntinguished style of sculptures of the Vijayanagar period are many large monolith carvings found at various sites of this kingdom. A large reclining Nandi located some distance to the north-east of the Lepakshi temple and a huge image of Ganesha enshrined as the main deity in a temple dedicated to him are fine examples of the period.

Even more impressive, perhaps, is a grand representation of a seated Ugra Narasimha or “Angry Narasimha” at Vijayanagar. The sculpture is six and a half metres in height and was dedicated in 1528 C.E. during the reign of Krishnadeva Raya. The huge sculpture literally dwarfs its human worshippers.

It is believed that a figure of Lakshmi was originally seated on the deity’s lap.

It is set within a walled enclosure facing the east and a seven headed snake can be seen above the head of Narasimha.

The sculpture was badly damaged but has been repaired by the Archaeological Survey of India.

5. चौमुखा मंदिर, माउण्ट आबू, राजस्थान

राजस्थान स्थित माउण्ट आबू अपने बहुसंख्य जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यह भारत में जैन वास्तुकला का एक नवीन उदाहरण है। इन मंदिरों का बाह्य भाग साधारण है पर अन्दर की दीवारों पर उत्कृष्ट रूप से नक्काशी किए हुए संगमरमर के फलक हैं। जैन मंदिर में अनुप्रस्थ भाग, स्तंभ युक्त द्वार मंडप और मंडपों से युक्त एक बंद सभा भवन है जो कि बावन कक्षों में तीर्थकरों की मूर्तियों से युक्त एक दीवार से घिरा हुआ है।

5. Chaumukha Temple, Mount Abu, Rajasthan

Mount Abu in Rajasthan, is famous for its numerous Jain temples with fine examples of Jain architecture in India. These temples have a simple exterior but the inner walls have superbly carved marble panels. The Jain temple consists of a closed hall with transepts, pillared porticos and *mandapas* surrounded by a wall with fifty-two cells containing images of the Tirthankaras.

6. कक्ष, उत्कीर्ण स्तंभ एवं संगमरमर की छत, विमल वसाही मंदिर, माऊंट आबू, राजस्थान

विमल वसाही का यह मंदिर सन् 1031 के आसपास गुजरात के सोलंकी वंश के पहले राजा के एक मंत्री ने निर्मित करवाया था तथा उसने इस मंदिर को पहले तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित कर दिया था। इसका अष्टकोणीय गुंबद संकेन्द्रित घेरों से बना है जो कि अलंकृत उत्कीर्ण स्तंभों पर आधारित है। यह मंदिर पूर्णत: श्वेत संगमरमर से बना है तथा इसका आकार-प्रकार जैन वास्तुकला के अनुसार है। सजावट के लिए इस्तेमाल किया गया सफेद संगमरमर यहां से चालीस किलोमीटर दूर स्थित मकराना की खदानों से लाया गया था। यह आज तक एक रहस्य बना हुआ है कि इस संगमरमर को पहाड़ की चार हजार फीट की ऊंचाई तक कैसे पहुंचाया गया था। संगमरमर उच्च श्रेणी का होने के कारण ही मूर्तिकार अत्यंत सूक्ष्म रूप में आभूषण एवं वस्त्रों के डिजाइन उत्कीर्ण करने में सफल रहे थे।

6. Hall, Carved Pillars and Marble Ceiling, Vimala Vasahi Temple, Mount Abu, Rajasthan

The Vimala Vasahi temple was built by a minister under the first Solanki king of Gujarat around 1031 C.E. and is dedicated to the first Tirthankara, Adinath. The octagonal dome of the temple has been made up of concentric rings held up by richly ornamented carved pillars. The temple is constructed entirely of white marble and designed to conform to Jain architecture. The white marble for the decorations was brought from the quarries of Makrana which is about 40 kms. away. How the marble was raised to the top of the hill at a height of 4000 ft. remains a mystery even today. The quality of marble enabled the artists to carve fine details of jewellery and textile designs.

7. प्रतिमा, उत्कीर्ण स्तंभ, माऊंट आबू, राजस्थान

मंदिर में मंडप के स्तंभों को सजाने वाली आकृतियां, भित्ति स्तंभों तथा पुष्पमय चंदोवे के सजावटी आलों में स्थित हैं। ये आकृतियां या तो बैठी हुई स्थिति में हैं या फिर नृत्य की मुद्रा में खड़ी हुई और या फिर लेटी हुई मुद्रा में हैं। इन मूर्ति-शिल्पों से हमें तत्कालीन लोगों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के साथ-साथ उनके परिधानों, केश-विन्यास एवं आभूषणों के डिजाइन के विषय में काफी जानकारी प्राप्त होती है।

7. Sculpture, Carved Pillar, Mount Abu, Rajasthan

The figures that adorn the *mandapa* pillars in the temple are set within a decorative niche of pilasters and floral canopies. The figures, are shown either seated, standing in dance poses or reclining. From these sculptures, we are able to learn many details about the social and cultural life of people as also their costumes, hairstyles and jewellery designs.

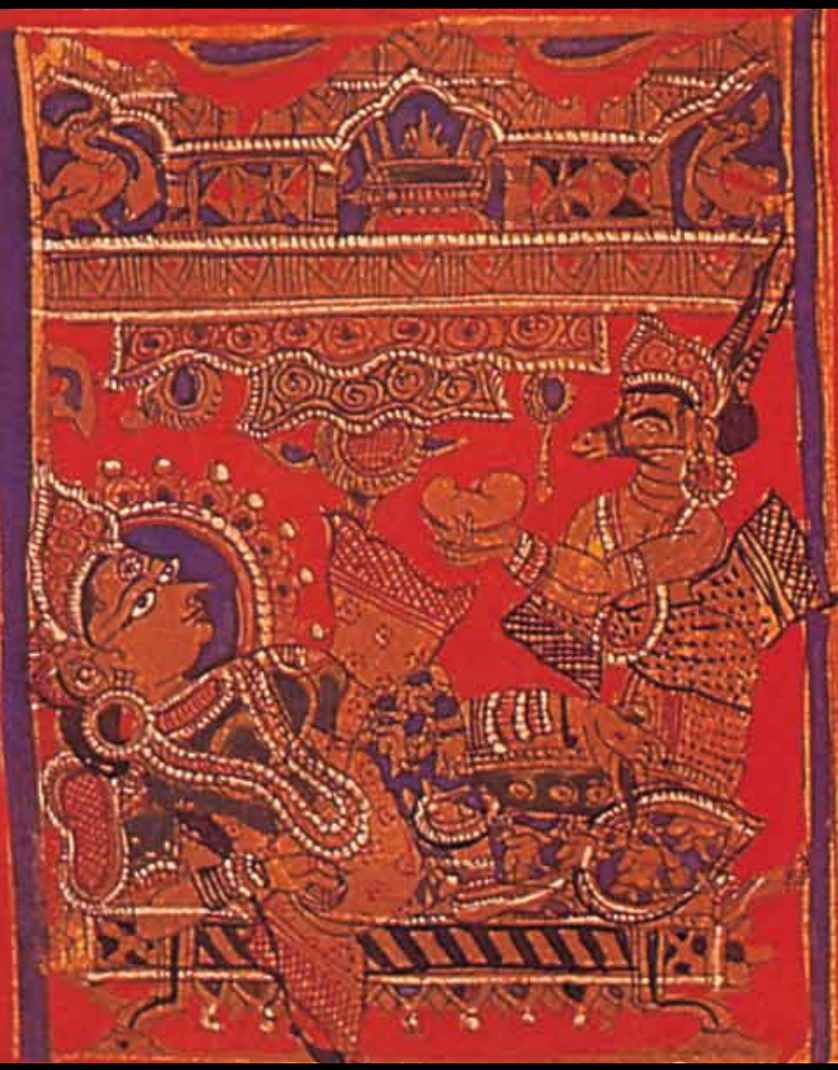

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

8. कल्पसूत्र, पांडुलिपि (तिथि अनिश्चित), पश्चिमी भारत

धर्म शास्त्रियों एवं चित्रकारों ने धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष पाठ्य सामग्री तैयार की थी तथा जिस मूल पाठ की नकल की जानी थी वह पांडुलिपि के पृष्ठों पर उतारा गया था। इस कार्य में हाशिया तथा चित्रों के लिए स्थान छोड़ने संबंधी सावधानी बरती गई थी। चित्रों के लिए मूल रंगों–लाल, नीला तथा पीला के साथ-साथ काला एवं श्वेत रंग भी इस्तेमाल किया गया था।

आभूषणों, वस्त्रों तथा भित्तिचित्रों के अन्य भागों को उभारने के लिए सोने का उपयोग किया गया था। आयताकार पृष्ठों को एक साथ बांधकर पांडुलिपि का रूप दिया गया था।

8. Kalpasutra Manuscript (undated), Western India

Religious and secular texts were prepared by scribes and painters. The text to be copied was transferred on to the page of the manuscript, taking care to leave appropriate margins and spaces for illustrations, or vice versa. The colours used for the illustration were the primary red, blue, yellow along with black and white. Gold was used to highlight jewellery and furnishings and other parts of the painting. Several such pages which were in rectangular shape were tied together to form the manuscript.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

9. कुतुब मीनार, दिल्ली

अगर हम भारत के किसी प्रतीक चिह्न के बारे में विचार करते हैं तो हमारे नेत्रों के सम्मुख जो छवियां प्रकट होती हैं उनमें से एक कुतुब मीनार की तस्वीर भी है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि यह भारत के महत्वपूर्ण स्मारकों में से एक है। 72.5 मीटर ऊंची यह गगनचुंबी इमारत परिष्कृत रूप से गोल, मूल्तः लाल पत्थर से निर्मित है। धरातल पर इसका परिमाप 13.75 मीटर है जो ऊंचाई पर जाकर 2.75 मीटर रह जाता है।

इस भव्य मीनार का निर्माण कार्य 12वीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ था जब कुतुब-उद्-दीन ने कुतुब मस्जिद योजना का विचार किया था। मगर कुतुब-उद्-दीन के दामाद और उत्तराधिकारी इल्तुत्मिश ने इसके निर्माण कार्य को पूरा करवाया था। भारत की आज तक की पत्थरों से बनी इस सबसे ऊंची मीनार का उपयोग, कहते हैं, मुअ्जीन नमाज की अजान देने के लिए किया करता था। कुतुब शब्द का अर्थ है–स्तंभ जो न्याय और संप्रभुता का प्रतीक है।

प्रारंभ में कुतुब मीनार की चार मंजिलें थीं। आज इसकी पाँच मंजिलें हैं जिनमें पहली तीन लाल पत्थर की तथा शेष दोनों लाल पत्थर और संगमरमर को मिलाकर बनाई गई है। बाहर की तरफ से सजावटी छज्जों से इसकी हर मंजिल अलग दिखाई देती है। इसी प्रकार इसकी प्रथम तीन मंजिलें भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार की हैं। चौथी सिर्फ गोल है तथा आखिरी चौथी मंजिल जो सन् 1368 में फिरोजशाह के काल में क्षतिग्रस्त हो गई थी, उसने उसे दो मंजिलों में विभक्त कर संगमरमर से बनवाया था।

9. Qutub Minar, Delhi

Think of a landmark for India and the stupendous picture of the Qutub Minar flashes before the eyes. For, undoubtedly the Qutub is one of the most impressive monuments in the country. Dominating the skyline at a height of 72.5 m, this elegantly circular, sandstone structure has a base of 13.75 m diameter which tapers to a mere 2.75 m at the apex.

The origin of the imposing Minar can be traced to the end of the 12th century when Qutub-ud-Din conceived it as part of the Qutub Mosque scheme. However, it was eventully completed by his son-in-law and successor Iltutmish. The highest stone tower in India till today, the Qutub Minar also served as the Minar of the mosque from where the Muezzin made his daily call to the worshippers to come to pray. The word 'Qutub' signifies a pole, the very pivot of justice and sovereignty.

As originally completed the Qutub comprised four storeys but today it has five storeys—the first three in red sandstone and others in marble and sandstone, with each storey clearly distinguishable from outside by decorative balconies. The first three storeys are each designed on a different plan. The fourth storey is simply round. The uppermost storey which was damaged in1368 C.E. during Firoz Shah's reign, was replaced by him by two storeys in marble.

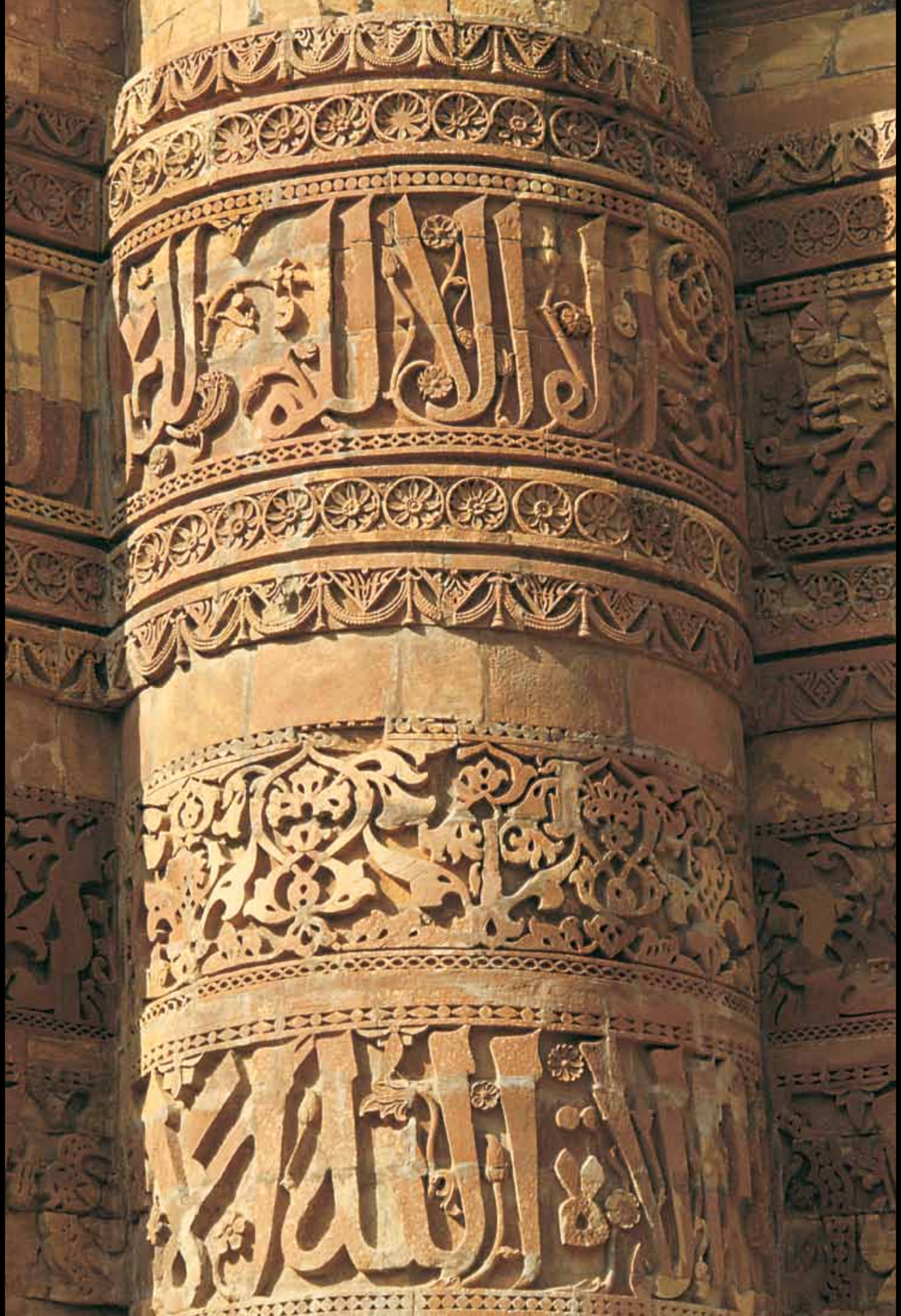

10. सुलेख (खुशनवीसी), कुतुब मीनार, दिल्ली

लाल बलुआ पत्थर व सफेद संगमरमर से बनी यह मीनार भारत में पाई जाने वाली पत्थर से बनी श्रेष्ठतम मीनारों में से एक हैं। इसकी कुल ऊंचाई 72.5 मीटर है। कुतुब मीनार की पांच मंजिलें हैं और प्रत्येक की बनावट भिन्न है। प्रत्येक मंजिल प्रक्षेपी छज्जों द्वारा विभाजित हैं। छज्जों के नीचे कुरान के वाक्यों के सुलेख सहित नक्काशीदार पत्थर के फलक हैं। सुलतान ने अपने भवनों के निर्माण के लिए स्थानीय शिल्पकारों और कलाकारों को रखा था।

10. Calligraphy, Qutub Minar, Delhi

The minar of red sandstone and white marble is one of the highest stone towers to be found in India with a total height of 72.5 metres. The Qutub Minar rises in five storeys and each has a different design. Each floor is divided by a projecting balcony. Below the balconies are carved stone panels with calligraphy of verses from the Quran. The Sultan employed local craftsmen and artists for the construction of their buildings.

11. अलाई दरवाजा, कुतुब परिसर, दिल्ली

अलाई दरवाजे में प्रवेश करते ही हम इस्लामी वास्तु निर्माण कला की ऐसी खूबसूरत दुनिया में प्रवेश कर जाते हैं जहां कि अनूठी रचना, मेहराबें, खास धरातलीय डिजाइन तथा (अलाऊद्दीन के प्रवेश द्वार) अलाई दरवाजे के गुबंद की मूल कल्पना जो कि 14वीं सदी के प्रारम्भ की वास्तु निर्माण की अद्‌भुत कला है, उसे सराहे बिना नहीं रह सकेंगे।

यह सन् 1305 के आसपास निर्मित हुआ था तथा यह अफगान तुर्क के खानदान के तीसरे वंशज खिलजी गांव के रहने वाले अला-उद्-दीन खिलजी ने भवनों की जो योजना बनाई थी, उसके अंतर्गत निर्मित हुआ था। खिलजी सन् 1296 में दिल्ली के शाही शख्त पर बैठा था। लाल पत्थरों का यह दरवाजा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में दक्षिण की तरफ से प्रवेश करने के लिए बनवाया गया था।

सदियों पुरानी इस मस्जिद का यह शाही दरवाजा पिछली छह शताब्दियों के दौरान थोड़ा-सा क्षतिग्रस्त हुआ है। इस प्रवेशद्वार का एक केन्द्रीय कक्ष भी है जो लगभग 16.76 मीटर लंबा है तथा इसका गुंबद लगभग 18.28 मीटर ऊंचा है। इसकी इस दिशा के मध्य में एक प्रवेशद्वार है जिनके दोनों तरफ जालीदार पत्थरों की खिड़कियां या झरोखे हैं। इस प्रकार का हर प्रवेशद्वार एक अंदरूनी कमरे में खुलता है जो 9.14 मीटर चौड़ा है तथा उसकी छत गुंबदाकार है।

लाल पत्थर के ये दरवाजे स्वयं में अपने प्रकार के ऐसे पहले निर्माण हैं जिनमें इस्लामी बनावट एवं सजावट का उपयोग किया गया है।

11. Alai Darwaza, Qutub Complex, Delhi

Through the Alai-Darwaza, one steps into the splendid world of Islamic architecture where you see the unique composition, the arches, the distinctive surface design and the original conception of the dome of the Alai-Darwaza (gateway of Alaud-din). And, you cannot but marvel at the skills of the architects of the beginning of the 14th century.

Built around 1305 C.E. the Alai-Darwaza was undertaken as part of the building project of Alaud-Din-Khalji—the third in line in the dynasty of Afghan Turks from the village of Khalji—who ascended the throne of Delhi in 1296 C.E. The sandstone gateway was erected to serve as the southern entrance to the Quwwat-ul-Islam mosque.

The stately entrance to the courtyard to the age-old mosque has suffered little damage in the last six centuries. The gate house has a main central hall—a cubical structure of 16.76 m side with a 18.28 m high dome. In the middle of each side is a doorway flanked by a perforated stone window. Each doorway opens into a single inner room—a hall of 9.14 m with a domed ceiling.

The sandstone gateway is the first building of its kind employing Islamic principles of construction and ornamentation.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

12. तुगलकाबाद, दिल्ली

तुगलक खानदान के संस्थापक ग्यास-उद्-दीन तुगलक ने अपनी राजधानी को दक्षिणी दिल्ली स्थित 'सिरी' से हटा कर दिल्ली के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थापित किया तथा वहां एक विशाल किला तुगलाकाबाद बनवाया। इस किले का डिजाईन लगभग अष्टकोणीय है तथा इसका व्यास लगभग 6.5 किलोमीटर है। इसकी दीवारें 10-15 मीटर ऊंची हैं तथा किले में बुर्ज और मजबूत द्वार हैं। बड़े-बड़े शिलाखंडों को एक साथ जोड़कर किले की दीवारें बनाई गई थीं ताकि बाहरी आक्रमणों से रक्षा हो सके।

12. Tughlaqabad, Delhi

Ghiyas-ud-din Tughlaq, who founded the Tughlaq dynasty shifted his capital from southern Delhi 'Siri' to the south-eastern side of Delhi and constructed the huge Tughlaqabad fort. It is roughly octagonal in plan with a perimeter of approximately 6.5 kms. The fort has massive walls, 10 to 15 metres high with bastions and fortified gates. The walls of the fort are built up of huge blocks of stone carefully packed together to provide a defensive structure against any attack.

13. ग्यास-उद्-दीन तुगलक का मकबरा, तुगलकाबाद, दिल्ली

ग्यास-उद्-दीन तुगलक एक शाही तुर्क था तथा सन् 1321 में उसने खिलजी वंश के बाद राजगद्दी संभाली थी। वह कुशल वास्तुकार भी था। उसने दिल्ली में अपनी नई राजधानी बसाई थी। अपनी ऊंची बुर्जो तथा 13 दरवाजों वाला यह किलेबंद नगर - तुगलकाबाद, दिल्ली का तीसरा शहर था। एक तरह से यह किला ग्यास-उद्-दीन की रचनात्मक शक्तियों का प्रतीक था।

इस अष्टकोणीय किले के दक्षिणी मुख्य प्रवेशद्वार के उस पार लाल पत्थर से बना ग्यास-उद्-दीन का मकबरा है। उसने इस मकबरे को स्वयं बनवाया था। इसकी दीवारों पर यहां-वहां संगमरमर का इस्तेमाल इस किलेनुमा मकबरे को विशिष्ट बना देता है।

सफेद संगमरमर के गुंबद पर लाल पत्थर की चोटी इस उत्कृष्ट मकबरे के गौरव को दर्शाती है। मूलत: यह मकबरा वर्षा के पानी के एक कृत्रिम विशाल तालाब के बीच बनाया गया था तथा एक पुल के जरिए तुगलकाबाद से जोड़ा गया था। आज इस पुल के बीच से कुतुब-बदरपुर सड़क जाती है।

13. Tomb of Ghiyas-ud-din Tughlaq, Tughlaqabad, Delhi

Ghiyas-ud-din Tughlaq, was a Turk nobleman who succeeded the Khaljis in 1321 C.E. The ruler of the Tughlaq dynasty, a keen architect added a new capital city in Delhi. The fortified town of Tughlaqabad, with high bastions and 13 gateways was the third city of Delhi, infact it was the creative genius of Ghiyas-ud-din Tughlaq.

Across the main entrance to the south of the octagonal fort is the red sandstone tomb of Ghiyas-ud-din himself. A restrained use of marble on the walls of the self-built tomb gives this fortress like structure a distinguished look.

A white marble dome with a circular sandstone marks the crowning glory of this exquisite tomb. Originally, the tomb was built within a vast artificial reservoir of rain water and was also connected to Tughlaqabad by a cause-way. The Qutub-Badarpur road now runs through the cause-way.

14. फिरोजशाह कोटला, दिल्ली

मोहम्मद बिन तुगलक के उत्तराधिकारी फिरोज शाह तुगलक ने सन् 1354 में यमुना नदी के दाहिनी किनारे पर दिल्ली का पांचवा मध्ययुगीन शहर फिरोजशाह बनवाया था।

उस काल के बहुत ज्यादा जनसंख्या वाले इस नगर के भग्नावशेष दक्षिण में हौज खास से लेकर उत्तर की हरियाली पट्टी तथा पूर्व में यमुना के किनारे तक फैले हैं। मुख्य अवशेष यमुना के किनारे पर स्थित कुश्क-ए-फिरोज या फिरोज शाह का महल है। इस महल की एक खास विशेषता ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के लाल बलुआ पत्थर का पालिश किया गया शुंडाकार एकाश्म स्तंभ है, जिसे अशोक स्तंभ के नाम से जाना जाता है। फिरोजशाह अपने महल की शोभा बढ़ाने हेतु इसे अंबाला से लेकर आया था। यह अशोक का दूसरा स्तंभ है तथा इसकी ऊंचाई 13.1 मीटर (42'7") है।

किले की विशाल मोटी दीवारें बड़े-बड़े पत्थरों को गारे से जोड़कर बनाई गई थीं तथा खुरदरी दीवारों को चिकना बनाने के लिए पलस्तर किया गया था या पालिश किए गए पत्थर की परत चढ़ाई गई थी।

14. Firoz Shah Kotla, Delhi

Firoz Shah Tughlaq, who succeeded Mohammad Bin Tughlaq constructed the fifth medieval city of Delhi called Firozabad on the right bank of river Jamuna in 1354 C.E.

The principal ruins of this once populous city extended from Hauz Khas in the south, to the ridge in the north and to the river Jamuna in the east. The principal ruins of this period is the Kushik-I-Firoz or palace of Firoz on the banks of river Jamuna. The most distinctive feature of this palace is a monolithic tapering column of polished sandstone from the 3rd century B.C.E. This structure known as the Ashoka column was brought by Firoz Shah from Ambala to grace his newly built palace. It is the second column of Ashoka measuring 13.1 m (42ft.7in) in height.

The massive thick walls of the fort were built with closely packed blocks of stones joint together with mortar, the rough walls were coated with plaster or covered by a layer of polished stone to give its walls a smooth finish.

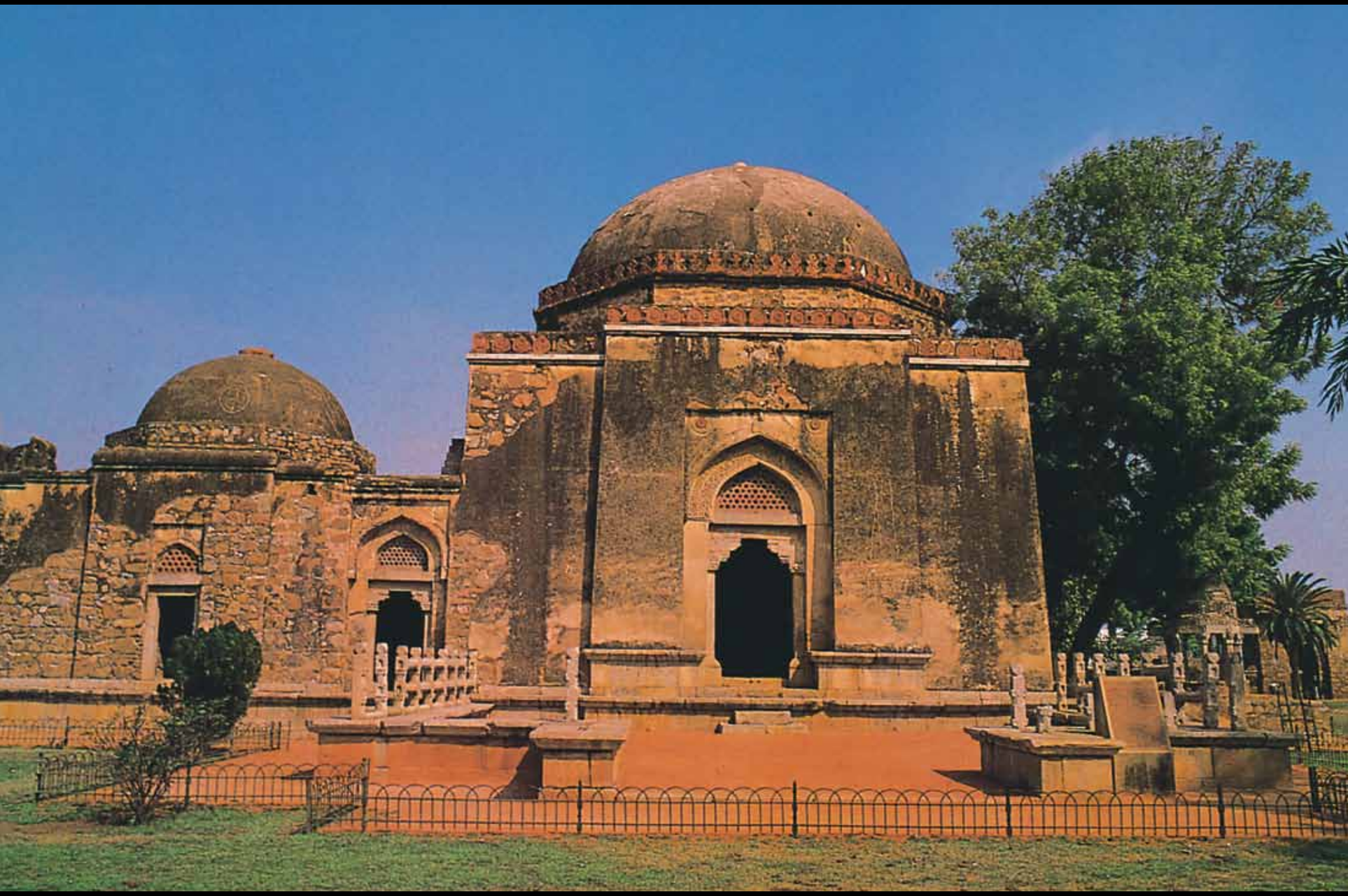

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

15. फिरोज शाह तुगलक का मकबरा, हौज़ खास, दिल्ली

फिरोज शाह तुगलक का स्वयं बनवाया गया अपना मकबरा एक चौरस कक्ष पर स्थित है, उसकी दीवारें ऊंची होने के साथ-साथ जरा सी कोणीय भी हैं। ऊंचा गुंबद हौज़ खास के खूबसूरत वातावरण में स्थित है। मकबरे का आंतरिक भाग मोटे पलस्तर में विभक्त जयामितिय डिजाइनों से कुशलतापूर्वक सजाया गया है।

ग्यास-उद्-दीन तुगलक, फिरोजशाह तुगलक तथा सिकन्दर लोदी के मकबरों की आपस में तुलना करके देखिए।

15. Tomb of Firoz Shah Tughlaq, Hauz-Khas, Delhi

Firoz Shah's self-built tomb stands on a square chamber with high and slightly angled walls, a lofty dome lies in the beautiful environment of the Hauz Khas. The interior of the tomb is finely decorated with geometrical designs that have been cut into the thick plaster.

Compare the tombs of Ghiyas-ud-din Tughlaq with Firoz Shah's and that of Sikandar Lodi.

16. बड़ा गुम्बद, लोदी बाग, दिल्ली

इस्लामी बागों और प्रांगणों का स्वयं में अपना ही एक खास आकर्षण होता है। किसी स्थान पर बाग स्थापित करने का अर्थ है कि उस स्थान के महत्व को उजागर करना। इस्लामी साहित्य के गद्य एवं पद्य दोनों में ही बागों की प्रशंसा होती रही है और उनकी तुलना स्वर्ग के बाग के साथ की जाती रही है।

लेडी विलिंगडन पार्क के नाम से भी पहचाने जाने वाली लोदी बागों में–मोहम्मद शाह सैययद का मकबरा, बड़ा गुंबद, शीश गुंबद तथा सिकंदर शाह लोदी का मकबरा - ये चार ऐतिहासिक महत्व के स्मारक स्थित हैं।

15वीं शताब्दी के अंत में सिकन्दर लोदी के शासनकाल में निर्मित मस्जिद हिंदू-इस्लामी वास्तुकला के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कुछ मकबरों के साथ बनी मस्जिदों में बड़ा गुंबद सबसे प्रारंभिक है। प्रचुर रूप में अलंकृत कुरान की आयतों से इसकी दीवारों को सजाया गया है। खूबसूरत रंग वाले पत्थर का उपयोग मस्जिद की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। एक विशेष आकार की पांच खुली-चौड़ी मेहराबें, जिनकी छत सपाट हैं, मस्जिद में नवीनता का समावेश करती हैं।

16. Bara Gumbad, Lodi Gardens, Delhi

Islamic gardens and courtyards have a very special charm and attraction. The establishment of a garden meant an opportunity to reveal the essence of a site. In Islamic literature, both in poetry and prose, the garden is lavishly praised and compared to the garden of Paradise.

In the Lodi Gardens, also known as Lady Wellington Park, there are four buildings of historical importance—the tomb of Mohammad Shah Saiyyed, Bara Gumbad, Shish Gumbad and the tomb of Sikandar Lodi.

Built towards the close of the 15th century C.E. during the reign of Sikandar Lodi, the mosque occupies a significant place in the development of Indo-Islamic architecture. Bara Gumbad is the earliest among mosque buildings attached to some of the tombs. Profusely ornamented Quranic inscriptions decorate the walls. Beautiful coloured tile work is one of the notable features of the mosque. Five wide open arches of a peculiar shape, with a flat top add an innovative touch to the mosque.

17. सिकन्दर लोदी का मकबरा, दिल्ली

लोदी बाग में ही सिकंदर लोदी का मकबरा भी स्थित है। यह स्मारक एक किले के लघु रूप से घिरे चौरस बाग में स्थित है। मकबरा अपनी योजना में अष्टकोणीय है। इसके केंद्रीय कक्ष में सिकंदर लोदी की कब्र है तथा उसके चारों तरफ गुंबद हैं। यहां के अष्टकोणीय मकबरे की योजना को इसके बाद के मुगल मकबरों जैसे कि ताज महल आदि में इस्तेमाल किया गया है।

17. Tomb of Sikandar Lodi, Delhi

The tomb of Sikandar Lodi, lies in the Lodi Gardens. This building is situated in a square garden surrounded by a miniature fort. The tomb is octagonal in plan. The central room contains the grave of Sikandar Lodi and is surrounded by a verandah on all sides. Above the central room is a low dome. The octagonal tomb plan developed here was later adapted in Mughal tombs such as the Taj Mahal.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

18. जामा मस्जिद, अहमदाबाद, गुजरात

अहमदाबाद की जामा मस्जिद नि:संदेह भारत की एक खूबसूरत मस्जिद है। यह इस शहर के संस्थापक अहमदशाह द्वारा सन् 1424 में बनवाई गई थी। खुले प्रांगण की तीन ओर स्तंभ वाले गलियारे हैं तथा पश्चिम की तरफ की किबला दीवार के सम्मुख 260 स्तंभों वाला एक विशाल प्रार्थना कक्ष है। आले, गलियारे तथा स्तंभों के चारों तरफ ज्यामितीय तथा फूलों वाले डिजाइन हैं। प्रांगण की एक तरफ पानी की हौदी है जिसका उपयोग वजू के लिए किया जाता है। इसमें बलुवा पत्थर के फलकों की कलात्मक सजावट में हिंदू-इस्लामी परंपराओं का संश्लेषण हैं।

18. Jama Masjid, Ahmedabad, Gujarat

This is one of the largest mosques in India and certainly one of the most beautiful. It was built by the city's founder Ahmed Shah in 1424 C.E. The open courtyard has pillared corridors on three sides and a large prayer hall with 260 pillars on the qibla wall facing the western direction.

Niches, corridors and pillars are encircled by fine geometrical and floral designs. To one side of the courtyard is the water tank. The artistic decoration of the sandstone panels in the building are a synthesis of Hindu and Islamic traditions.

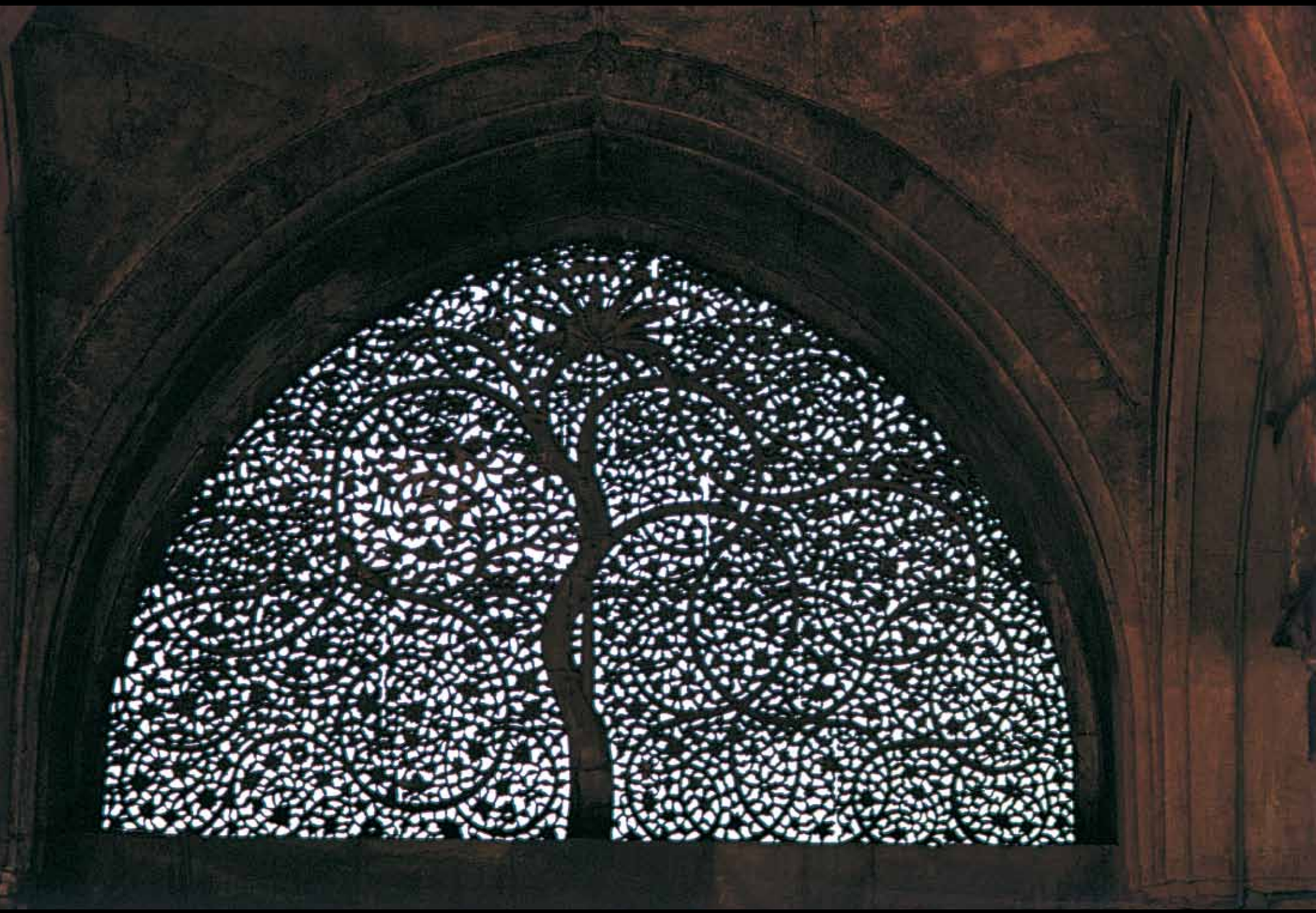

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

19. जाली का कार्य, आंतरिक दृश्य, सीदी सैय्यद मस्जिद, अहमदाबाद, गुजरात

सन् 1572-73 के आसपास निर्मित सीदी सैय्यद मस्जिद विभिन्न पुष्पमय एवं ज्यामितीय डिजाइनों वाली बलुवा पत्थर की भव्य जालियों के कारण अत्यंत प्रसिद्ध है।

जाली का डिजाइन अर्द्ध गोलाकार है तथा उसके मध्य में ताड़ का वृक्ष है जो जीवन का प्रतीक है। इसके चारों तरफ लता लिपटी हुई है जो मेहराब के आकार के खुले स्थान को अपनी पत्तियों और छोटे फूलों से ढकती है।

पूर्णमासी के दिन, चंद्रमा को जाली के पीछे से देखना अपने आप में एक सुखद अनुभव होता है।

19. Jalli work, Inside View, Sidi Sayyid Mosque, Ahmedabad, Gujarat

Sidi Sayyid mosque, built around 1572-73 C.E. is famous for its magnificently perforated sandstone screen (jallis) in varied intricate floral and geometrical designs.

The design on the jali is semi-circular with a palm tree—the symbolic tree of life, in the centre. A creeper gracefully curls itself embracing the tree, filling the arched opening with its tiny flowers, palm leaves and tendrils.

Viewing moon through the jali, on a full moon night becomes an amazing experience.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

20. गोलकुंडा का किला, आंध्र प्रदेश

गोलकुंडा, 16वीं शताब्दी के आरम्भ में बहमनी साम्राज्य के विघटन के बाद बने प्रांत का एक शक्तिशाली एवं धनी केन्द्र था। यह इस्लामी वास्तुकला की दक्खन शैली के तीसरे और आखिरी चरण का प्रतिनिधित्व करने वाले किलों और शाही मकबरों के लिए उल्लेखनीय है।

गोलकुंडा का किला हैदराबाद से पश्चिम दिशा में 8.5 किलोमीटर दूर है तथा यह सन् 1512 में 120 मीटर ऊंची पहाड़ी चोटी पर बनाया गया था। किले की बाहरी परदे वाली दीवार की परिधि 4.8 किलोमीटर है तथा विशाल पत्थरों की दीवार बड़े शिलाखंडों से बनाई गई थी। अनेक शिलाखंडों का वजन कई टन है।

इस किले की खास विशेषताओं में से एक इसकी ध्वनि-नियंत्रण की व्यवस्था भी है। किले के निचले भाग में बजाई गई ताली की आवाज ऊंचाई पर स्थित दरबार हाल में सुनी जा सकती है।

यह किला इतना अजेय था कि औरंगजेब की सेना सन् 1686 में एक वर्ष की घेराबंदी के पश्चात् ही इस पर अधिकार कर पाई थी। गोलकुंडा के कुतुब शाही स्मारकों की बड़ी मेहराबें, अलंकृत अग्रभाग और गुंबद इसकी विशेष पहचान है।

20. Golconda Fort, Andhra Pradesh

Golconda was the centre of a rich and powerful state formed by the disintegration of the Bahamini kingdom in the early 16th century C.E. It is outstanding for both its fort and the royal tombs which represent the third and final phase of the Deccan style of Islamic architecture.

The Golconda fort is about 8.5 km west of Hyderabad and was built on a rocky hill top (120 metre high) in 1512 C.E. The outer curtain wall of the fort is 4.8 km in circumference and the massive stone walls were built of large masonry blocks, some of them weighing several tonnes.

One of the most noticeable features of the fort is the system of acoustics. The sounds of clappings of hands in the ground portico can be heard in the Durbar Hall at the very top of the hill.

The fort was so impregnable that it fell to the Mughal forces of Aurangzeb only after a year long seige in 1686 C.E. The Qutub Shahi monuments in Golconda are distinguished by large arches, ornamental facades and domes.

مريم

امراتي عاقرا وقد بلغت من الكبر
عتيا ۝ قال كذلك قال ربك
هو علي هين وقد خلقتك من قبل
ولم تك شيا ۝ قال رب اجعل لي
اية قال ايتك الا تكلم الناس
ثلث ليال سويا ۝ فخرج على قومه
من المحراب فاوحى اليهم ان سبحوا
بكرة وعشيا ۝ يا يحيى خذ الكتاب
بقوة واتيناه الحكم صبيا ۝ وحنانا
من لدنا وزكوة وكان تقيا ۝
وبرا بوالديه ولم يكن جبارا
عصيا ۝ وسلام عليه يوم ولد
۝ ويوم يموت ويوم يبعث حيا

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

21. कुरान, सल्तनत, दक्खन

कुरान के इस पृष्ठ को 16वीं शताब्दी के आरंभ में चित्रित किया गया था। कागज अरब व्यापारियों द्वारा उसके अविष्कार के स्थान चीन से भारत में लाया गया था। कई पृष्ठों वाली पुस्तकों की नकल की गई थी और उन्हें हाथों से सजाया गया था। लेखक-कलाकारों ने पानी वाले विभिन्न रंगों और सोने के रंग का इस्तेमाल किया था। इस प्रकार की एक पांडुलिपि को तैयार करने में अनेक वर्ष लगते थे तथा हर पृष्ठ को कला का नमूना बनाने के लिए कलाकारों को लगन एवं कठोर मेहनत से काम करना पड़ता था।

21. Quran, Sultanate, Deccan

This page from the Quran, was illustrated in the early 16th century C.E. Paper was brought by Arab traders to India from China where it was invented. Books with several pages were copied and decorated by hand. The artist-scribe used a variety of water colour and gold paint. A manuscript like this would have taken years to complete, requiring artistic dedication and hard work to make each page, a work of art.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

22. पांडुलिपि का चित्र, हम्ज़ा नामा

हम्ज़ा नामा अनेक कहानियों एवं दंत कथाओं का संग्रह है। हरेक क्षेत्र ने अपने यहां की चित्रण शैली को बरकरार रखते हुए इस पांडुलिपि की विभिन्न कालों में नकल तैयार की थी। नकल करने वाले की चित्रण शैली स्वयं में विशिष्ट है। हम्ज़ा नामा के इस 16वीं सदी के चित्र में बाग युक्त स्तंभों वाला बरामदा दर्शाया गया है। इसमें फूल, वृक्ष, कमरों की साज-सज्जा तथा उस काल के परिधानों को भी देखा जा सकता है। इन चित्रों से हमें जानकारी मिलती है कि विभिन्न ऐतिहासिक कालों में लोगों का रहन-सहन एवं वेश भूषा कैसी थी।

22. Manuscript Painting from Hamza Nama

The Hamza Nama is a compilation of several stories and legends. This manuscript was copied in different regions and during different quarters and each retained their own style painting and illustration. In this 16th century C.E. illustration of the Hamza Nama, there is a pillared verandah with a garden. Flowers, trees, the furnishings of the room and costumes of the period can also be seen. From such pictures, we can get an idea of how people lived and dressed in different historical periods.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

23. ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

भारत में मुगल शासन के भवन निर्माण काल में शाहजहाँ का समय स्वर्ण काल माना जाता है। शाहजहाँ के पूर्वजों ने भवन-निर्माण में बलुवा पत्थर इस्तेमाल किया था। परन्तु शाहजहाँ ने इसकी तुलना में संगमरमर को प्राथमिकता दी।

विश्व के सात आश्चर्यों में से ताजमहल भी एक है और यह अपने संतुलित डिज़ाइन के लिए माना जाता है। इस मक़बरे का हर हिस्सा - चाहे वह गुंबद हो या छतरियाँ या फिर मीनारें, बाग़ और सजावट, सभी मिलकर एक सुंदर एवं पूर्ण सामंजस्य स्थापित करते हैं। ताज वैसे तो यमुना के किनारे स्थित था, पर कालांतर में यमुना नदी अपने स्थान से अपना मार्ग बदलते हुए अब ताज से थोड़ा हट कर बहती है।

मुख्य मकबरा एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है तथा इसके हर कोने में एक मीनार है। इन मीनारों की डिज़ाइन कुछ इस प्रकार का है कि इनका झुकाव थोड़ा-सा बाहर की तरफ है। ऐसा इसलिए किया गया है कि अगर कभी ये गिरें भी, तो बाहर की तरफ गिरें, मुख्य मक़बरे पर नहीं। चार बाग़ शैली में बना बाग़, लॉन और फव्वारों से सुव्यवस्थित है। बाग के मध्य में संगमरमर का जल-कुंड भी है।

दाहिनी तरफ पेड़ों के पीछे इस मक़बरे का पूर्वी दरवाज़ा दृष्टिगत है।

23. Taj Mahal, Agra, Uttar Pradesh

The period of Shahjahan is known as the golden period of Mughal architecture in India. Shahjahan preferred marble to sandstone which was largely used by his predecessors.

The Taj Mahal, one of the seven wonders of the world, is known for its symmetry of design. Every part of this mausoleum—the dome, cupolas, minarets, garden and decoration present a perfect harmony. The Taj Mahal, was situated on the banks of the river Yamuna, which has since shifted some distance away over the centuries.

The main mausoleum is standing on a marble platform with four minarets in each corner. These minarets have been designed with a slight outward tilt, so that, if they ever collapsed they would fall away from the main building. The garden, designed on the Char Bagh pattern has well laid out lawns and water fountains. A marble tank in the centre of the garden is also seen.

On the right, behind the trees, one sees the eastern gateway of the mausoleum.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

24. चार मीनार, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश

पुराने हैदराबाद शहर के मध्य में सुप्रसिद्ध चार मीनार का निर्माण मुहम्मद कुली कुतुब शाह ने सन् 1511 में करवाया था। चार मंजिलें इस भवन की सबसे ऊपरी मंजिल पर मस्जिद स्थित है। खास कुतुब शाही शैली में निर्मित इस मस्जिद में तैयार गज तथा गुलदस्तों के आकार की मीनारें हैं। कोनों में भी लघु रूप में मीनारें हैं। चार मीनार के चारों तरफ भरा-पूरा और व्यस्त बाजार है। चार मीनार के पास ही मक्का मस्जिद की इमारत है। यह विश्व की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक मानी जाती है तथा इसमें 10,000 लोग एक साथ नमाज अदा कर सकते हैं। इसका निर्माण सन् 1614 में प्रारंभ हुआ था तथा 70 वर्ष के विभिन्न चरणों में पूरा हुआ।

24. Charminar, Hyderabad, Andhra Pradesh

Standing in the midst of the old walled city of Hyderabad, the famed Charminar was built in 1591 A.D. by Mohammed Quli Qutub Shah. This four storey building has a mosque on its top most floor. The Charminar is built in typical Qutub Shahi style with finished stucco ornamentation and guldasta style minars with miniature minarets at the corner. The Charminar is surrounded by interesting lively bazaars. Next to the Charminar, is the Mecca masjid, which is considered to be one of the largest mosques in the world and can accommodate upto 10,000 worshippers. It's construction started in 1614 A.D. and proceeded in stages over a period of 70 years.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

1. ग्वालियर का किला, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

ग्वालियर का किला सपाट चोटी तथा मुड़े हुए किनारों वाली एक बलुआ पत्थर की ऊंची और अलग सी पहाड़ी पर स्थित है। यह लंबी एवं संकरी पहाड़ी आस-पास के समतल मैदानों से लगभग 300 फीट ऊँचाई तक जाती है। यह उत्तर से दक्षिण तक लगभग 3 कि.मी. लम्बी तथा पूर्व से पश्चिम तक लगभग 600 से 2800 फीट चौड़ी है। पहाड़ी के किनारों पर कुछ इस प्रकार से पलस्तर लगाया गया है कि किले की दीवार पहाड़ी के अन्दर से ही उभरती हुई सी प्रतीत होती है।

ग्वालियर का नगर दुर्ग (किला) दसवीं शताब्दी में निर्मित हुआ। सन् 950 में यहां सूरज पाल द्वारा हिन्दू राजवंश संस्थापित हुआ। सन् 1129 में जब यह राजवंश लुप्त हो गया तो इसके पश्चात् परीहार राजवंश आया जिसका सन् 1232 में दिल्ली के बादशाह इल्तुत्मिश द्वारा किला जीत लेने तक किले पर आधिपत्य रहा। सन् 1398 में बीरसिंह देव नाम तोमर राजपूत ने तैमूर की चढ़ाई द्वारा फैली अशांति का लाभ उठाया। वह ग्वालियर का राजा बन गया और उसने तोमर राजवंश की स्थापना की। सन् 1486 में मानसिंह ग्वालियर का राजा बना जो सभी तोमर शासकों में सबसे शक्तिशाली था। सन् 1516 में उसकी मृत्यु हुई और उसके पश्चात् उसके पुत्र विक्रमादित्य ने सन् 1518 तक ग्वालियर पर शासन किया। सन् 1518 में इब्राहीम लोदी ने अपनी दो वर्ष की घेरेबंदी सफलतापूर्वक पूरी की और दिल्ली सल्तनत के लिए ग्वालियर का किला जीत लिया। मुगल शासकों का अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक किले पर आधिपत्य रहा और सन् 1754 में मराठों ने किले को अपने अधिकार में ले लिया।

अगले 50 वर्षों तक अनेक राजवंशों द्वारा किले पर आक्रमण होते रहे और अंत में सिन्धिया राजवंश ने इस पर आधिपत्य जमा लिया।

इस ऐतिहासिक काल के दौरान किले के नीचे और किले के अन्दर बहुत-सी इमारतें बनाई गईं, जिसमें मंदिर और मुस्लिम महल शामिल हैं जैसे मानसिंह महल, गुर्जरी महल, सास-बहू मंदिर, तेली का मंदिर, आदि।

2. लक्ष्मी नारायण मंदिर, चम्बा, हिमाचल प्रदेश

चम्बा और कुल्लू में 13वीं शताब्दी के पूर्व के समय के कुछ थोड़े-से छोटे मंदिर हैं। ये मंदिर इस समय की हिमालयी वास्तुकला के उत्तम उदाहरण हैं और अपने सादे डिजाइन और *विमान* की मनोहर रेखाओं के कारण स्मरणीय हैं। *शिखरों* की छतें और ड्योढ़ियां (द्वार मंडप) व्यावहारिक ढंग से ढलुवां बने हुए हैं। इसी कारण हिमपात होने पर इन पर बर्फ इकट्ठी नहीं होती एवं ढलुवां होने के कारण नीचे सरक कर गिर जाती है।

प्रस्तुत चित्र में, हम चम्बा स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर को देख सकते हैं। कहा जाता है कि साहिला वर्मन (सन् 920-40 सा: काल) द्वारा शहर की नींव रखे जाने के कुछ ही समय पश्चात् यह मंदिर बनवाया गया था। इस मंदिर में सफेद संगमरमर से बनी और स्वर्ण आभूषणों से अलंकृत भगवान विष्णु की प्रतिमा है।

3. विठ्ठल मंदिर और रथ, हम्पी, कर्नाटक

हम्पी, कर्नाटक के बेल्लारी जिले में तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। हम्पी का इतिहास नवप्रस्तर काल और साथ ही चालुक्य, चोल तथा पांडय राजवंशों से जुड़ा हुआ है। यहां पर, सन् 1336 में विजयनगर अर्थात ''विजय के नगर'' को हरिहर और बुक्का नामक दो भाईयों ने स्थापित किया, जिन्हें जनप्रिय रूप में हुक्का और बुक्का नाम से जाना जाता है। हालांकि, विजयनगर के सर्वाधिक शक्तिशाली, लोकप्रिय और विशिष्ट राजा - कृष्णदेव राय थे, जिन्होंने सन् 1509 से सन् 1530 तक शासन किया। वे स्वयं एक कवि थे और नृत्य, संगीत कला तथा वास्तुकला के महान संरक्षक थे।

हम्पी में बहुसंख्य इमारतें बनाई गईं, जिनमें बड़े गोपुरम, स्तंभयुक्त मंडप और मंदिर रथ सम्मिलित हैं। प्रस्तुत चित्र में चबूतरे पर नक्काशीदार शिल्प से अलंकृत मंदिर, मंडप और सुंदर ढंग से तक्षित स्तंभ देखे जा सकते हैं। अग्र भाग में, चित्र के दाहिनी ओर, आप पत्थर पर उत्कीर्णित पहियों के साथ एक संपूर्ण रथ देख सकते हैं। आज बहुत से इतिहासकार और वास्तुकलाविद् इस स्थान का अध्ययन करने हेतु हम्पी की प्राचीन राजधानी, उसके महलों, सड़कों, मंदिरों और अन्य इमारतों की खुदाई कर रहे हैं।

4. नरसिंह, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

दक्षिण व उत्तरी विधाओं की तुलना में विजयनगर के कलाकारों ने अपने मंदिरों में ज्यादा उभार वाली उत्कीर्ण कला का प्रयोग बहुत ही कम किया है। विजयनगरीय विशेष मूर्ति शैली में राज्य के विभिन्न भागों में विशाल एकाश्म उत्कीर्ण-शिल्प मिलते हैं। लेपाक्षी मंदिर के उत्तर-पूर्वी हिस्से में विशाल नंदी तथा गणेशजी-समर्पित मंदिर में गणेशजी की विशाल आकृति उस युग के सुंदर कला-नमूने हैं।

संभवत: इन से भी ज्यादा भव्य तो विजयनगर में बैठे हुए उग्र नरसिंह का मूर्ति-शिल्प है। यह साढ़े छ: मीटर ऊँची है तथा कृष्णदेव राय के शासनकाल में सन् 1528 में निर्मित की गई थी। एक प्रकार से यह विशाल आकृति मानवीय भक्तों के सम्मुख विशालकाय लगती है।

ऐसी धारणा है कि मूलत: नरसिंह देवता की गोद में बैठी लक्ष्मी की आकृति भी थी।

यह चारदीवारी से घिरे स्थान में स्थित है एवं पूर्वाभिमुखी है। नरसिंह के मस्तक के ऊपर सात फनों वाले शेषनाग के सिर को भी देखा जा सकता है।

यद्यपि यह मूर्ति-शिल्प काफी क्षतिग्रस्त हो गया था पर पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इसका पुनरूद्धार कर दिया गया।

5. चौमुखा मंदिर, माउण्ट आबू, राजस्थान

राजस्थान स्थित माउण्ट आबू अपने बहुसंख्य जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यह भारत में जैन वास्तुकला का एक नवीन उदाहरण है। इन मंदिरों का बाह्य भाग साधारण है पर अन्दर की दीवारों पर उत्कृष्ट रूप से नक्काशी किए हुए संगमरमर के फलक हैं। जैन मंदिर में अनुप्रस्थ भाग, स्तंभ युक्त द्वार मंडप और मंडपों से युक्त एक बंद सभा भवन है जो कि बावन कक्षों में तीर्थकरों की मूर्तियों से युक्त एक दीवार से घिरा हुआ है।

6. कक्ष, उत्कीर्ण स्तंभ एवं संगमरमर की छत, विमल वसाही मंदिर, माऊंट आबू, राजस्थान

विमल वसाही का यह मंदिर सन् 1031 के आसपास गुजरात के सोलंकी वंश के पहले राजा के एक मंत्री ने निर्मित करवाया था तथा उसने इस मंदिर को पहले तीर्थकर आदिनाथ को समर्पित कर दिया था। इसका अष्टकोणीय गुंबद संकेन्द्रित घेरों से बना है जो कि अलंकृत उत्कीर्ण स्तंभों पर आधारित है। यह मंदिर पूर्णत: श्वेत संगमरमर से बना है तथा इसका आकार-प्रकार जैन वास्तुकला के अनुसार है। सजावट के लिए इस्तेमाल किया गया सफेद संगमरमर यहां से चालीस किलोमीटर दूर स्थित मकराना की खदानों से लाया गया था। यह आज तक एक रहस्य बना हुआ है कि इस संगमरमर को पहाड़ की चार हजार फीट की ऊंचाई तक कैसे पहुंचाया गया था। संगमरमर उच्च श्रेणी का होने के कारण ही मूर्तिकार अत्यंत सूक्ष्म रूप में आभूषण एवं वस्त्रों के डिजाइन उत्कीर्ण करने में सफल रहे थे।

7. प्रतिमा, उत्कीर्ण स्तंभ, माऊंट आबू, राजस्थान

मंदिर में मंडप के स्तंभों को सजाने वाली आकृतियां, भित्ति स्तंभों तथा पुष्पमय चंदोवे के सजावटी आलों में स्थित हैं। ये आकृतियां या तो बैठी हुई स्थिति में हैं या फिर नृत्य की मुद्रा में खड़ी हुई और या फिर लेटी हुई मुद्रा में हैं। इन मूर्ति-शिल्पों से हमें तत्कालीन लोगों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के साथ-साथ उनके परिधानों, केश-विन्यास एवं आभूषणों के डिजाइन के विषय में काफी जानकारी प्राप्त होती है।

8. कल्पसूत्र, पांडुलिपि (तिथि अनिश्चित), पश्चिमी भारत

धर्म शास्त्रियों एवं चित्रकारों ने धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष पाठ्य सामग्री तैयार की थी तथा जिस मूल पाठ की नकल की जानी थी वह पांडुलिपि के पृष्ठों पर उतारा गया था। इस कार्य में हाशिया तथा चित्रों के लिए स्थान छोड़ने संबंधी सावधानी बरती गई थी। चित्रों के लिए मूल रंगों—लाल, नीला तथा पीला के साथ-साथ काला एवं श्वेत रंग भी इस्तेमाल किया गया था।

आभूषणों, वस्त्रों तथा भित्तिचित्रों के अन्य भागों को उभारने के लिए सोने का उपयोग किया गया था। आयताकार पृष्ठों को एक साथ बांधकर पांडुलिपि का रूप दिया गया था।

9. कुतुब मीनार, दिल्ली

अगर हम भारत के किसी प्रतीक चिह्न के बारे में विचार करते हैं तो हमारे नेत्रों के सम्मुख जो छवियां प्रकट होती हैं उनमें से एक कुतुब मीनार की तस्वीर भी है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि यह भारत के महत्वपूर्ण स्मारकों में से एक है। 72.5 मीटर ऊंची यह गगनचुंबी इमारत परिष्कृत रूप से गोल, मूल्त: लाल पत्थर से निर्मित है। धरातल पर इसका परिमाप 13.75 मीटर है जो ऊंचाई पर जाकर 2.75 मीटर रह जाता है।

इस भव्य मीनार का निर्माण कार्य 12वीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ था जब कुतुब-उद्-दीन ने कुतुब मस्जिद योजना का विचार किया था। मगर कुतुब-उद्-दीन के दामाद और उत्तराधिकारी इल्तुत्मिश ने इसके निर्माण कार्य को पूरा करवाया था। भारत की आज तक की पत्थरों से बनी इस सबसे ऊंची मीनार का उपयोग, कहते हैं, मुअ्जीन नमाज की अजान देने के लिए किया करता था। कुतुब शब्द का अर्थ है—स्तंभ जो न्याय और संप्रभुता का प्रतीक है।

प्रारंभ में कुतुब मीनार की चार मंजिलें थीं। आज इसकी पाँच मंजिलें हैं जिनमें पहली तीन लाल पत्थर की तथा शेष दोनों लाल पत्थर और संगमरमर को मिलाकर बनाई गई है। बाहर की तरफ से सजावटी छज्जों से इसकी हर मंजिल अलग दिखाई देती है। इसी प्रकार इसकी प्रथम तीन मंजिलें भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार की हैं। चौथी सिर्फ गोल है तथा आखिरी चौथी मंजिल जो सन् 1368 में फिरोजशाह के काल में क्षतिग्रस्त हो गई थी, उसने उसे दो मंजिलों में विभक्त कर संगमरमर से बनवाया था।

10. सुलेख (खुशनवीसी), कुतुब मीनार, दिल्ली

लाल बलुआ पत्थर व सफेद संगमरमर से बनी यह मीनार भारत में पाई जाने वाली पत्थर से बनी श्रेष्ठतम मीनारों में से एक हैं। इसकी कुल ऊंचाई 72.5 मीटर है। कुतुब मीनार की पांच मंजिलें हैं और प्रत्येक की बनावट भिन्न है। प्रत्येक मंजिल प्रक्षेपी छज्जों द्वारा विभाजित हैं। छज्जों के नीचे कुरान के वाक्यों के सुलेख सहित नक्काशीदार पत्थर के फलक हैं। सुलतान ने अपने भवनों के निर्माण के लिए स्थानीय शिल्पकारों और कलाकारों को रखा था।

11. अलाई दरवाजा, कुतुब परिसर, दिल्ली

अलाई दरवाजे में प्रवेश करते ही हम इस्लामी वास्तु निर्माण कला की ऐसी खूबसूरत दुनिया में प्रवेश कर जाते हैं जहां कि अनूठी रचना, मेहराबें, खास धरातलीय डिजाइन तथा (अलाऊद्दीन के प्रवेश द्वार) अलाई दरवाजे के गुबंद की मूल कल्पना जो कि 14वीं सदी के प्रारम्भ की वास्तु निर्माण की अद्भुत कला है, उसे सराहे बिना नहीं रह सकेंगे।

यह सन् 1305 के आसपास निर्मित हुआ था तथा यह अफगान तुर्क के खानदान के तीसरे वंशज खिलजी गांव के रहने वाले अला-उद्-दीन खिलजी ने भवनों की जो योजना बनाई थी, उसके अंतर्गत निर्मित हुआ था। खिलजी सन् 1296 में दिल्ली के शाही शख्त पर बैठा था। लाल

पत्थरों का यह दरवाजा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में दक्षिण की तरफ से प्रवेश करने के लिए बनवाया गया था।

सदियों पुरानी इस मस्जिद का यह शाही दरवाजा पिछली छह शताब्दियों के दौरान थोड़ा-सा क्षतिग्रस्त हुआ है। इस प्रवेशद्वार का एक केन्द्रीय कक्ष भी है जो लगभग 16.76 मीटर लंबा है तथा इसका गुंबद लगभग 18.28 मीटर ऊंचा है। इसकी इस दिशा के मध्य में एक प्रवेशद्वार है जिनके दोनों तरफ जालीदार पत्थरों की खिड़कियां या झरोखे हैं। इस प्रकार का हर प्रवेशद्वार एक अंदरूनी कमरे में खुलता है जो 9.14 मीटर चौड़ा है तथा उसकी छत गुंबदाकार है।

लाल पत्थर के ये दरवाजे स्वयं में अपने प्रकार के ऐसे पहले निर्माण हैं जिनमें इस्लामी बनावट एवं सजावट का उपयोग किया गया है।

12. तुगलकाबाद, दिल्ली

तुगलक खानदान के संस्थापक ग्यास-उद्-दीन तुगलक ने अपनी राजधानी को दक्षिणी दिल्ली स्थित 'सिरी' से हटा कर दिल्ली के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थापित किया तथा वहां एक विशाल किला तुगलाकाबाद बनवाया। इस किले का डिजाईन लगभग अष्टकोणीय है तथा इसका व्यास लगभग 6.5 किलोमीटर है। इसकी दीवारें 10-15 मीटर ऊंची हैं तथा किले में बुर्ज और मजबूत द्वार हैं। बड़े-बड़े शिलाखंडों को एक साथ जोड़कर किले की दीवारें बनाई गई थीं ताकि बाहरी आक्रमणों से रक्षा हो सके।

13. ग्यास-उद्-दीन तुगलक का मकबरा, तुगलकाबाद, दिल्ली

ग्यास-उद्-दीन तुगलक एक शाही तुर्क था तथा सन् 1321 में उसने खिलजी वंश के बाद राजगद्दी संभाली थी। वह कुशल वास्तुकार भी था। उसने दिल्ली में अपनी नई राजधानी बसाई थी। अपनी ऊंची बुर्जों तथा 13 दरवाजों वाला यह किलेबंद नगर - तुगलकाबाद, दिल्ली का तीसरा शहर था। एक तरह से यह किला ग्यास-उद्-दीन की रचनात्मक शक्तियों का प्रतीक था।

इस अष्टकोणीय किले के दक्षिणी मुख्य प्रवेशद्वार के उस पार लाल पत्थर से बना ग्यास-उद्-दीन का मकबरा है। उसने इस मकबरे को स्वयं बनवाया था। इसकी दीवारों पर यहां-वहां संगमरमर का इस्तेमाल इस किलेनुमा मकबरे को विशिष्ट बना देता है।

सफेद संगमरमर के गुंबद पर लाल पत्थर की चोटी इस उत्कृष्ट मकबरे के गौरव को दर्शाती है। मूलत: यह मकबरा वर्षा के पानी के एक कृत्रिम विशाल तालाब के बीच बनाया गया था तथा एक पुल के जरिए तुगलकाबाद से जोड़ा गया था। आज इस पुल के बीच से कुतुब-बदरपुर सड़क जाती है।

14. फिरोजशाह कोटला, दिल्ली

मोहम्मद बिन तुगलक के उत्तराधिकारी फिरोज शाह तुगलक ने सन् 1354 में यमुना नदी के दाहिनी किनारे पर दिल्ली का पांचवा मध्ययुगीन शहर फिरोजशाह बनवाया था।

उस काल के बहुत ज्यादा जनसंख्या वाले इस नगर के भग्नावशेष दक्षिण में हौज खास से लेकर उत्तर की हरियाली पट्टी तथा पूर्व में यमुना के किनारे तक फैले हैं। मुख्य अवशेष यमुना के किनारे पर स्थित कुश्क-ए-फिरोज या फिरोज शाह का महल है। इस महल की एक खास विशेषता ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के लाल बलुआ पत्थर का पालिश किया गया शुंडाकार एकाश्म स्तंभ है, जिसे अशोक स्तंभ के नाम से जाना जाता है। फिरोजशाह अपने महल की शोभा बढ़ाने हेतु इसे अंबाला से लेकर आया था। यह अशोक का दूसरा स्तंभ है तथा इसकी ऊंचाई 13.1 मीटर (42' 7'') है।

किले की विशाल मोटी दीवारें बड़े-बड़े पत्थरों को गारे से जोड़कर बनाई गई थीं तथा खुरदरी दीवारों को चिकना बनाने के लिए पलस्तर किया गया था या पालिश किए गए पत्थर की परत चढ़ाई गई थी।

15. फिरोज शाह तुगलक का मकबरा, हौज़ खास, दिल्ली

फिरोज शाह तुगलक का स्वयं बनवाया गया अपना मकबरा एक चौरस कक्ष पर स्थित है, उसकी दीवारें ऊंची होने के साथ-साथ जरा सी कोणीय भी हैं। ऊंचा गुंबद हौज़ खास के खूबसूरत वातावरण में स्थित है। मकबरे का आंतरिक भाग मोटे पलस्तर में विभक्त जयामितिय डिजाइनों से कुशलतापूर्वक सजाया गया है।

ग्यास-उद्-दीन तुगलक, फिरोजशाह तुगलक तथा सिकन्दर लोदी के मकबरों की आपस में तुलना करके देखिए।

16. बड़ा गुम्बद, लोदी बाग, दिल्ली

इस्लामी बागों और प्रांगणों का स्वयं में अपना ही एक खास आकर्षण होता है। किसी स्थान पर बाग स्थापित करने का अर्थ है कि उस स्थान के महत्व को उजागर करना। इस्लामी साहित्य के गद्य एवं पद्य दोनों में ही बागों की प्रशंसा होती रही है और उनकी तुलना स्वर्ग के बाग के साथ की जाती रही है।

लेडी विलिंगडन पार्क के नाम से भी पहचाने जाने वाली लोदी बागों में-मोहम्मद शाह सैयय्द का मकबरा, बड़ा गुंबद, शीश गुंबद तथा सिकंदर शाह लोदी का मकबरा - ये चार ऐतिहासिक महत्व के स्मारक स्थित हैं।

15वीं शताब्दी के अंत में सिकन्दर लोदी के शासनकाल में निर्मित मस्जिद हिंदू-इस्लामी वास्तुकला के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कुछ मकबरों के साथ बनी मस्जिदों में बड़ा गुंबद सबसे प्रारंभिक है। प्रचुर रूप में अलंकृत कुरान की आयतों से इसकी दीवारों को सजाया गया है। खूबसूरत रंग वाले पत्थर का उपयोग मस्जिद की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। एक विशेष आकार की पांच खुली-चौड़ी मेहराबें, जिनकी छत सपाट हैं, मस्जिद में नवीनता का समावेश करती हैं।

17. सिकन्दर लोदी का मकबरा, दिल्ली

लोदी बाग में ही सिकंदर लोदी का मकबरा भी स्थित है। यह स्मारक एक किले के लघु रूप से घिरे चौरस बाग में स्थित है। मकबरा अपनी योजना में अष्टकोणीय है। इसके केंद्रीय कक्ष में सिकंदर लोदी की कब्र है तथा उसके चारों तरफ गुंबद हैं। यहां के अष्टकोणीय मकबरे की योजना को इसके बाद के मुगल मकबरों जैसे कि ताज महल आदि में इस्तेमाल किया गया है।

18. जामा मस्जिद, अहमदाबाद, गुजरात

अहमदाबाद की जामा मस्जिद नि:संदेह भारत की एक खूबसूरत मस्जिद है। यह इस शहर के संस्थापक अहमदशाह द्वारा सन् 1424 में बनवाई गई थी। खुले प्रांगण की तीन ओर स्तंभ वाले गलियारे हैं तथा पश्चिम की तरफ की किबला दीवार के सम्मुख 260 स्तंभों वाला एक विशाल प्रार्थना कक्ष है। आले, गलियारे तथा स्तंभों के चारों तरफ ज्यामितीय तथा फूलों वाले डिजाइन हैं। प्रांगण की एक तरफ पानी की हौदी है जिसका उपयोग वजू के लिए किया जाता है। इसमें बलुवा पत्थर के फलकों की कलात्मक सजावट में हिंदू-इस्लामी परंपराओं का संश्लेषण है।

19. जाली का कार्य, आंतरिक दृश्य, सीदी सैय्यद मस्जिद, अहमदाबाद, गुजरात

सन् 1572-73 के आसपास निर्मित सीदी सैय्यद मस्जिद विभिन्न पुष्पमय एवं ज्यामितीय डिजाइनों वाली बलुवा पत्थर की भव्य जालियों के कारण अत्यंत प्रसिद्ध है।

जाली का डिजाइन अर्द्ध गोलाकार है तथा उसके मध्य में ताड़ का वृक्ष है जो जीवन का प्रतीक है। इसके चारों तरफ लता लिपटी हुई है जो मेहराब के आकार के खुले स्थान को अपनी पत्तियों और छोटे फूलों से ढकती है।

पूर्णमासी के दिन, चंद्रमा को जाली के पीछे से देखना अपने आप में एक सुखद अनुभव होता है।

20. गोलकुंडा का किला, आंध्र प्रदेश

गोलकुंडा, 16वीं शताब्दी के आरम्भ में बहमनी साम्राज्य के विघटन के बाद बने प्रांत का एक शक्तिशाली एवं धनी केन्द्र था। यह इस्लामी वास्तुकला की दक्खन शैली के तीसरे और आखिरी चरण का प्रतिनिधित्व करने वाले किलों और शाही मकबरों के लिए उल्लेखनीय है।

गोलकुंडा का किला हैदराबाद से पश्चिम दिशा में 8.5 किलोमीटर दूर है तथा यह सन् 1512 में 120 मीटर ऊंची पहाड़ी चोटी पर बनाया गया था। किले की बाहरी परदे वाली दीवार की परिधि 4.8 किलोमीटर है तथा विशाल पत्थरों की दीवार बड़े शिलाखंडों से बनाई गई थी। अनेक शिलाखंडों का वजन कई टन है।

इस किले की खास विशेषताओं में से एक इसकी ध्वनि-नियंत्रण की व्यवस्था भी है। किले के निचले भाग में बजाई गई ताली की आवाज ऊंचाई पर स्थित दरबार हाल में सुनी जा सकती है।

यह किला इतना अजेय था कि औरंगजेब की सेना सन् 1686 में एक वर्ष की घेराबंदी के पश्चात् ही इस पर अधिकार कर पाई थी। गोलकुंडा के कुतुब शाही स्मारकों की बड़ी मेहराबें, अलंकृत अग्रभाग और गुंबद इसकी विशेष पहचान है।

21. कुरान, सल्तनत, दक्खन

कुरान के इस पृष्ठ को 16वीं शताब्दी के आरंभ में चित्रित किया गया था। कागज अरब व्यापारियों द्वारा उसके अविष्कार के स्थान चीन से भारत में लाया गया था। कई पृष्ठों वाली पुस्तकों की नकल की गई थी और उन्हें हाथों से सजाया गया था। लेखक-कलाकारों ने पानी वाले विभिन्न रंगों और सोने के रंग का इस्तेमाल किया था। इस प्रकार की एक पांडुलिपि को तैयार करने में अनेक वर्ष लगते थे तथा हर पृष्ठ को कला का नमूना बनाने के लिए कलाकारों को लगन एवं कठोर मेहनत से काम करना पड़ता था।

22. पांडुलिपि का चित्र, हम्ज़ा नामा

हम्ज़ा नामा अनेक कहानियों एवं दंत कथाओं का संग्रह है। हरेक क्षेत्र ने अपने यहां की चित्रण शैली को बरकरार रखते हुए इस पांडुलिपि की विभिन्न कालों में नकल तैयार की थी। नकल करने वाले की चित्रण शैली स्वयं में विशिष्ट है। हम्ज़ा नामा के इस 16वीं सदी के चित्र में बाग युक्त स्तंभों वाला बरामदा दर्शाया गया है। इसमें फूल, वृक्ष, कमरों की साज-सज्जा तथा उस काल के परिधानों को भी देखा जा सकता है। इन चित्रों से हमें जानकारी मिलती है कि विभिन्न ऐतिहासिक कालों में लोगों का रहन-सहन एवं वेश भूषा कैसी थी।

23. ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

भारत में मुगल शासन के भवन निर्माण काल में शाहजहाँ का समय स्वर्ण काल माना जाता है। शाहजहाँ के पूर्वजों ने भवन-निर्माण में बलुवा पत्थर इस्तेमाल किया था। परन्तु शाहजहाँ ने इसकी तुलना में संगमरमर को प्राथमिकता दी।

विश्व के सात आश्चर्यों में से ताजमहल भी एक है और यह अपने संतुलित डिज़ाइन के लिए माना जाता है। इस मक़बरे का हर हिस्सा-चाहे वह गुंबद हो या छतरियाँ या फिर मीनारें, बाग़ और सजावट, सभी मिलकर एक सुंदर एवं पूर्ण सामंजस्य स्थापित करते हैं। ताज वैसे तो यमुना के किनारे स्थित था, पर कालांतर में यमुना नदी अपने स्थान से अपना मार्ग बदलते हुए अब ताज से थोड़ा हट कर बहती है।

मुख्य मकबरा एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है तथा इसके हर कोने में एक मीनार है। इन मीनारों की डिज़ाइन कुछ इस प्रकार का है कि इनका झुकाव थोड़ा-सा बाहर की तरफ है। ऐसा इसलिए किया गया है कि अगर कभी ये गिरें भी, तो बाहर की तरफ गिरें, मुख्य मक़बरे पर नहीं। चार बाग़ शैली में बना बाग़, लॉन और फव्वारों से सुव्यवस्थित है। बाग के मध्य में संगमरमर का जल-कुंड भी है।

दाहिनी तरफ पेड़ों के पीछे इस मक़बरे का पूर्वी दरवाज़ा दृष्टिगत है।

24. चार मीनार, हैदराबाद आन्ध्र प्रदेश

पुराने हैदराबाद शहर के मध्य में सुप्रसिद्ध चार मीनार का निर्माण मुहम्मद कुली कुतुब शाह ने सन् 1511 में करवाया था। चार मंजिलें इस भवन की सबसे ऊपरी मंजिल पर मस्जिद स्थित है। खास कुतुब शाही शैली में निर्मित इस मस्जिद में तैयार गज तथा गुलदस्तों के आकार की मीनारें हैं। कोनों में भी लघु रूप में मीनारें हैं। चार मीनार के चारों तरफ भरा-पूरा और व्यस्त बाजार है। चार मीनार के पास ही मक्का मस्जिद की इमारत है। यह विश्व की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक मानी जाती है तथा इसमें 10,000 लोग एक साथ नमाज अदा कर सकते हैं। इसका निर्माण सन् 1614 में प्रारंभ हुआ था तथा 70 वर्ष के विभिन्न चरणों में पूरा हुआ।

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
3

1. Gwalior Fort, Gwalior, Madhya Pradesh

The fortress stands on a flat-topped, sheer-sided and isolated sandstone hill. The hill rises up to 300 feet above the surrounding plains, and is long and narrow, measuring approximately 3 kms. from north to south and from 600 to 2,800 feet, east to west. The sides of the hill are revetted so that the fort wall seems to grow out of the hillside.

The citadel of Gwalior had been inhabited from the tenth century. In 950 C.E. a Hindu dynasty was founded there by Suraj Pal. When this became extinct in 1129 C.E., it was followed by the Parihari dynasty, which held the citadel until it was caputred by the Delhi emperor Iltumish in 1232 C.E. In 1398 C.E., Bir Singh Deo, a Tomar Rajput, took advantage of the turmoil caused by Timur's invasion. He became the king of Gwalior and established the Tomar dynasty. Man Singh who came to power in 1486 C.E., was the greatest of the Tomar rulers. He died in 1516 C.E. and his son Vikramaditya controlled Gwalior until 1518 C.E., when Ibrahim Lodi successfully concluded a two year siege and won back the fortress for the Delhi sultanate. The Mughals held the fort till the mid-eighteenth century, until the Marathas conquered it in 1754 C.E.

For the next 50 years, the fort was invaded by different dynasties till it was taken over by the Scindias.

During this long and varied history, many buildings were erected in or below the fortress, including palaces and temples which include Man Singh Palace, Gujari Mahal, Saas-Bahu Temple, Teli ka Mandir.

2. Lakshmi Narayan Temple, Chamba, Himachal Pradesh

There are quite a few small temples at Chamba and Kulu, dating back to the early 13th century C.E. These temples are good examples of Himalayan architecture of the period and noteworthy for their simple design and the graceful lines of the *vimana.* The sloping roofs of the *shikaras* and the porticos are perhaps utilitarian, as the snow does not collect on such structures but slides down, thus keeping the roof clear of snow and water.

In this picture, we see Lakshmi Narayan Temple, located at Chamba. The temple is said to have been founded by Sahila Verman (920-40 C.E.) shortly after the foundation of the town was laid. The temple contains an image of Lord Vishnu in white marble adorned with gold ornaments.

3. Vithala Temple and Ratha, Hampi, Karnataka

Hampi is situated on the southern bank of the Tungabhadra river in Bellary district of Karnataka. The history of Hampi is associated with the Neolithic age and subsequently with the various Chalukyas, Cholas and the Pandyas. Here, Vijayanagar, "the city of victory" was founded by two brothers, Harihara and Bukka, popularly known as Hukka and Bukka in 1336 C.E. However, the most powerful, popular and distinguished King of Vijayanagar was Krishnadeva Raya who ruled from 1509 to 1530 C.E. He was a poet and a great patron of dance, music, art and architecture.

Numerous structures are built at Hampi which include large *gopurams,* pillared *mandapas* and temple chariots. In this picture, the temple, *mandapas* and carved pillars are seen decorated with bas relief sculptures on the platform. In front, on the right of the picture, you can see a complete *ratha* with wheels carved in stone. Today many historians and archaeologists are excavating the site to study the ancient capital of Hampi, its palaces, roads, temples and other buildings.

4. Narasimha, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

In comparison to many Deccan and Northern schools, the sculptors of Vijayanagar used carvings sparingly on their temples. A very disntinguished style of sculptures of the Vijayanagar period are many large monolith carvings found at various sites of this kingdom. A large reclining Nandi located some distance to the north-east of the Lepakshi temple and a huge image of Ganesha enshrined as the main deity in a temple dedicated to him are fine examples of the period.

Even more impressive, perhaps, is a grand representation of a seated Ugra Narasimha or "Angry Narasimha" at Vijayanagar. The sculpture is six and a half metres in height and was dedicated in 1528 C.E. during the reign of Krishnadeva Raya. The huge sculpture literally dwarfs its human worshippers.

It is believed that a figure of Lakshmi was originally seated on the deity's lap.

It is set within a walled enclosure facing the east and a seven headed snake can be seen above the head of Narasimha.

The sculpture was badly damaged but has been repaired by the Archaeological Survey of India.

5. Chaumukha Temple, Mount Abu, Rajasthan

Mount Abu in Rajasthan, is famous for its numerous Jain temples with fine examples of Jain architecture in India. These temples have a simple exterior but the inner walls have superbly carved marble panels. The Jain temple consists of a closed hall with transepts, pillared porticos and *mandapas* surrounded by a wall with fifty-two cells containing images of the Tirthankaras.

6. Hall, Carved Pillars and Marble Ceiling, Vimala Vasahi Temple, Mount Abu, Rajasthan

The Vimala Vasahi temple was built by a minister under the first Solanki king of Gujarat around 1031 C.E. and is dedicated to the first Tirthankara, Adinath. The octagonal dome of the temple has been made up of concentric rings held up by richly ornamented carved pillars. The temple is constructed entirely of white marble and designed to conform to Jain architecture. The white marble for the decorations was brought from the quarries of Makrana which is about 40 kms. away. How the marble was raised to the top of the hill at a height of 4000 ft. remains a mystery even today. The quality of marble enabled the artists to carve fine details of jewellery and textile designs.

7. Sculpture, Carved Pillar, Mount Abu, Rajasthan

The figures that adorn the *mandapa* pillars in the temple are set within a decorative niche of pilasters and floral canopies. The figures, are shown either seated, standing in dance poses or reclining. From these sculptures, we are able to learn many details about the social and cultural life of people as also their costumes, hairstyles and jewellery designs.

8. Kalpasutra Manuscript (undated), Western India

Religious and secular texts were prepared by scribes and painters. The text to be copied was transferred on to the page of the manuscript, taking care to leave appropriate margins and spaces for illustrations, or vice versa. The colours used for the illustration were the primary red, blue, yellow along with black and white. Gold was used to highlight jewellery and furnishings and other parts of the painting. Several such pages which were in rectangular shape were tied together to form the manuscript.

9. Qutub Minar, Delhi

Think of a landmark for India and the stupendous picture of the Qutub Minar flashes before the eyes. For, undoubtedly the Qutub is one of the most impressive monuments in the country. Dominating the skyline at a height of 72.5 m, this elegantly circular, sandstone structure has a base of 13.75 m diameter which tapers to a mere 2.75 m at the apex.

The origin of the imposing Minar can be traced to the end of the 12th century when Qutub-ud-Din conceived it as part of the Qutub Mosque scheme. However, it was eventully completed by his son-in-law and successor Iltutmish. The highest stone tower in India till today, the Qutub Minar also served as the Minar of the mosque from where the Muezzin made his daily call to the worshippers to come to pray. The word 'Qutub' signifies a pole, the very pivot of justice and sovereignty.

As originally completed the Qutub comprised four storeys but today it has five storeys—the first three in red sandstone and others in marble and sandstone, with each storey clearly distinguishable from outside by decorative balconies. The first three storeys are each designed on a different plan. The fourth storey is simply round. The uppermost storey which was damaged in1368 C.E. during Firoz Shah's reign, was replaced by him by two storeys in marble.

10. Calligraphy, Qutub Minar, Delhi

The minar of red sandstone and white marble is one of the highest stone towers to be found in India with a total height of 72.5 metres. The Qutub Minar rises in five storeys and each has a different design. Each floor is divided by a projecting balcony. Below the balconies are carved stone panels with calligraphy of verses from the Quran. The Sultan employed local craftsmen and artists for the construction of their buildings.

11. Alai Darwaza, Qutub Complex, Delhi

Through the Alai-Darwaza, one steps into the splendid world of Islamic architecture where you see the unique composition, the arches, the distinctive surface design and the original conception of the dome of the Alai-Darwaza (gateway of Alaud-din). And, you cannot but marvel at the skills of the architects of the beginning of the 14th century.

Built around 1305 C.E. the Alai-Darwaza was undertaken as part of the building project of Alaud-Din-Khalji—the third in line in the dynasty of Afghan Turks from the village of Khalji—who ascended the throne of Delhi in 1296 C.E. The

sandstone gateway was erected to serve as the southern entrance to the Quwwat-ul-Islam mosque.

The stately entrance to the courtyard to the age-old mosque has suffered little damage in the last six centuries. The gate house has a main central hall—a cubical structure of 16.76 m side with a 18.28 m high dome. In the middle of each side is a doorway flanked by a perforated stone window. Each doorway opens into a single inner room—a hall of 9.14 m with a domed ceiling.

The sandstone gateway is the first building of its kind employing Islamic principles of construction and ornamentation.

12. Tughlaqabad, Delhi

Ghiyas-ud-din Tughlaq, who founded the Tughlaq dynasty shifted his capital from southern Delhi 'Siri' to the south-eastern side of Delhi and constructed the huge Tughlaqabad fort. It is roughly octagonal in plan with a perimeter of approximately 6.5 kms. The fort has massive walls, 10 to 15 metres high with bastions and fortified gates. The walls of the fort are built up of huge blocks of stone carefully packed together to provide a defensive structure against any attack.

13. Tomb of Ghiyas-ud-din Tughlaq, Tughlaqabad, Delhi

Ghiyas-ud-din Tughlaq, was a Turk nobleman who succeeded the Khaljis in 1321 C.E. The ruler of the Tughlaq dynasty, a keen architect added a new capital city in Delhi. The fortified town of Tughlaqabad, with high bastions and 13 gateways was the third city of Delhi, infact it was the creative genius of Ghiyas-ud-din Tughlaq.

Across the main entrance to the south of the octagonal fort is the red sandstone tomb of Ghiyas-ud-din himself. A restrained use of marble on the walls of the self-built tomb gives this fortress like structure a distinguished look.

A white marble dome with a circular sandstone marks the crowning glory of this exquisite tomb. Originally, the tomb was built within a vast artificial reservoir of rain water and was also connected to Toughlaqabad by a cause-way. The Qutub-Badarpur road now runs through the cause-way.

14. Firoz Shah Kotla, Delhi

Firoz Shah Tughlaq, who succeeded Mohammad Bin Tughlaq constructed the fifth medieval city of Delhi called Firozabad on the right bank of river Jamuna in 1354 C.E.

The principal ruins of this once populous city extended from Hauz Khas in the south, to the ridge in the north and to the river Jamuna in the east. The principal ruins of this period is the Kushik-I-Firoz or palace of Firoz on the banks of river Jamuna. The most distinctive feature of this palace is a monolithic tapering column of polished sandstone from the 3rd century B.C.E. This structure known as the Ashoka column was brought by Firoz Shah from Ambala to grace his newly built palace. It is the second column of Ashoka measuring 13.1 m (42ft.7in) in height.

The massive thick walls of the fort were built with closely packed blocks of stones joint together with mortar, the rough walls were coated with plaster or covered by a layer of polished stone to give its walls a smooth finish.

15. Tomb of Firoz Shah Tughlaq, Hauz-Khas, Delhi

Firoz Shah's self-built tomb stands on a square chamber with high and slightly angled walls, a lofty dome lies in the beautiful environment of the Hauz Khas The interior of the tomb is finely decorated with geometrical designs that have been cut into the thick plaster.

Compare the tombs of Ghiyas-ud-din Tughlaq with Firoz Shah's and that of Sikandar Lodi.

16. Bara Gumbad, Lodi Gardens, Delhi

Islamic gardens and courtyards have a very special charm and attraction. The establishment of a garden meant an opportunity to reveal the essence of a site. In Islamic literature, both in poetry and prose, the garden is lavishly praised and compared to the garden of Paradise.

In the Lodi Gardens, also known as Lady Wellington Park, there are four buildings of historical importance—the tomb of Mohammad Shah Saiyyed, Bara Gumbad, Shish Gumbad and the tomb of Sikandar Lodi.

Built towards the close of the 15th century C.E. during the reign of Sikandar Lodi, the mosque occupies a significant place in the development of Indo-Islamic architecture. Bara Gumbad is the earliest among mosque buildings attached to some of the tombs. Profusely ornamented Quranic inscriptions decorate the walls. Beautiful coloured tile work is one of the notable features of the mosque. Five wide open arches of a peculiar shape, with a flat top add an innovative touch to the mosque.

17. Tomb of Sikandar Lodi, Delhi

The tomb of Sikandar Lodi, lies in the Lodi Gardens. This building is situated in a square garden surrounded by a miniature fort. The tomb is octagonal in plan. The central room contains the grave of Sikandar Lodi and is surrounded by a verandah on all sides. Above the central room is a low dome. The octagonal tomb plan developed here was later adapted in Mughal tombs such as the Taj Mahal.

18. Jama Masjid, Ahmedabad, Gujarat

This is one of the largest mosques in India and certainly one of the most beautiful. It was built by the city's founder Ahmed Shah in 1424 C.E. The open courtyard has pillared corridors on three sides and a large prayer hall with 260 pillars on the qibla wall facing the western direction.

Niches, corridors and pillars are encircled by fine geometrical and floral designs. To one side of the courtyard is the water tank. The artistic decoration of the sandstone panels in the building are a synthesis of Hindu and Islamic traditions.

19. Jalli work, Inside View, Sidi Sayyid Mosque, Ahmedabad, Gujarat

Sidi Sayyid mosque, built around 1572-73 C.E. is famous for its magnificently perforated sandstone screen (jallis) in varied intricate floral and geometrical designs.

The design on the jali is semi-circular with a palm tree—the symbolic tree of life, in the centre. A creeper gracefully curls itself embracing the tree, filling the arched opening with its tiny flowers, palm leaves and tendrils.

Viewing moon through the jali, on a full moon night becomes an amazing experience.

20. Golconda Fort, Andhra Pradesh

Golconda was the centre of a rich and powerful state formed by the disintegration of the Bahamini kingdom in the early 16th century C.E. It is outstanding for both its fort and the royal tombs which represent the third and final phase of the Deccan style of Islamic architecture.

The Golconda fort is about 8.5 km west of Hyderabad and was built on a rocky hill top (120 metre high) in 1512 C.E. The outer curtain wall of the fort is 4.8 km in circumference and the massive stone walls were built of large masonry blocks, some of them weighing several tonnes.

One of the most noticeable features of the fort is the system of acoustics. The sounds of clappings of hands in the ground portico can be heard in the Durbar Hall at the very top of the hill.

The fort was so impregnable that it fell to the Mughal forces of Aurangzeb only after a year long seige in 1686 C.E. The Qutub Shahi monuments in Golconda are distinguished by large arches, ornamental facades and domes.

21. Quran, Sultanate, Deccan

This page from the Quran, was illustrated in the early 16th century C.E. Paper was brought by Arab traders to India from China where it was invented. Books with several pages were copied and decorated by hand. The artist-scribe used a variety of water colour and gold paint. A manuscript like this would have taken years to complete, requiring artistic dedication and hard work to make each page, a work of art.

22. Manuscript Painting from Hamza Nama

The Hamza Nama is a compilation of several stories and legends. This manuscript was copied in different regions and during different quarters and each retained their own style painting and illustration. In this 16th century C.E. illsutration of the Hamza Nama, there is a pillared verandah with a garden. Flowers, trees, the furnishings of the room and costumes of the period can also be seen. From such pictures, we can get an idea of how people lived and dressed in different historical periods.

23. Taj Mahal, Agra, Uttar Pradesh

The period of Shahjahan is known as the golden period of Mughal architecture in India. Shahjahan preferred marble to sandstone which was largely used by his predecessors.

The Taj Mahal, one of the seven wonders of the world, is known for its symmetry of design. Every part of this mausoleum—the dome, cupolas, minarets, garden and decoration present a perfect harmony. The Taj Mahal, was situated on the banks of the river Yamuna, which has since shifted some distance away over the centuries.

The main mausoleum is standing on a marble platform with four minarets in each corner. These minarets have been designed with a slight outward tilt, so that, if they ever collapsed they would fall away from the main building. The garden, designed on the Char Bagh pattern has well laid out lawns and water fountains. A marble tank in the centre of the garden is also seen.

On the right, behind the trees, one sees the eastern gateway of the mausoleum.

24. Charminar, Hyderabad, Andhra Pradesh

Standing in the midst of the old walled city of Hyderabad, the famed Charminar was built in 1591 A.D. by Mohammed Quli Qutub Shah. This four storey building has a mosque on its top most floor. The Charminar is built in typical Qutub Shahi style with finished stucco ornamentation and guldasta style minars with miniature minaretes at the corner. The Charminar is surrounded by interesting lively bazaars. Next to the Charminar, is the Mecca masjid, which is considered to be one of the largest mosques in the world and can accommodate upto 10,000 worshippers. It's construction started in 1614 A.D. and proceeded in stages over a period of 70 years.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training
Published by Director, Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi
Printed at Aravali Printers & Publishers Pvt. Ltd., New Delhi-110020
2013